RPSC, RSSB

एवं अन्य बोर्ड द्वारा राजस्थान में आयोजित विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए उपयोगी।

AKSHANSH PUBLICATION

नवगठित 7 संभागों एवं 41 जिलों पर आधारित

राजस्थान कला संस्कृति एवं विरासत

प्रथम संस्करण

RAJASTHAN PYQ SERIES

अध्यायवार प्रश्नों की व्याख्या

आर.ए.एस. (RAS), प्रथम श्रेणी, द्वितीय श्रेणी एवं तृतीय श्रेणी अध्यापक, REET, सब इंस्पेक्टर, राज. पुलिस कांस्टेबल, जेल प्रहरी, CET, BSTC, PTET, पटवार, ग्राम सेवक, एल. डी. सी., जूनियर एकाउंटेंट, एग्रीकल्चर सुपरवाइजर एवं अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए उपयोगी पुस्तक।

2010 से 2025 तक के समस्त वर्षों में पूछे गए प्रश्नों का विश्लेषणात्मक एवं व्याख्यात्मक संकलन

करण सर

अक्षांश पब्लिकेशन

M. 9079798005, 6376491126

Plot No 1104, Shiksha Mandir, Sec 4, Circle, Main Road, Udaipur

व्याख्यात्मक हल

लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर

के यूट्यूब चैनल पर उपलब्ध

AKSHANSH PUBLICATION

द्वितीय श्रेणी शिक्षक, चतुर्थ श्रेणी, कांस्टेबल, पटवार एवं स्कूल व्याख्याता सहित 2025 तक आयोजित सभी परीक्षाओं के प्रश्नपत्रों का टॉपिक-वाइज विस्तृत व्याख्या सहित संकलन।

चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	2025
पटवार	2021, 2025
कॉन्स्टेबल	2022, 2024, 2025
स्कूल व्याख्याता (1st grade)	2021, 2023, 2025
द्वितीय श्रेणी शिक्षक (2nd grade) (माध्यमिक शिक्षा एवं संस्कृत शिक्षा विभाग के प्रश्न पत्र)	2020, 2022, 2025
तृतीय श्रेणी शिक्षक (3rd grade)	2021, 2022, 2024
REET PRE. EXAM	2018, 2021, 2024
RAS	2021, 2023, 2025
जेल प्रहरी	2022, 2025
महिला पर्यवेक्षक	2024, 2025
BSTC	2022-2025
PTET	2022-2025
CET (10+2, स्नातक)	2023, 2024
पशु परिचर	2024
CHO	2024
ANM & Nurse	2024
सूचना सहायक	2024
संगणक	2024
सांख्यिकी अधिकारी	2024
कनिष्ठ लेखाकार	2016, 2024
प्रयोगशाला सहायक	2018, 2022, 2024
पुस्तकालय अध्यक्षक	2024
खाद्य सुरक्षा अधिकारी	2024
स्टेनोग्राफर	2021, 2023
Protection Officer	2023
Asstt. Fire Officer & Fireman	2022
कम्प्यूटर अनूदेशक	2022
वनपाल वनरक्षक	2022
ग्राम विकास अधिकारी	2021, 2022
पुलिस उपनिरीक्षक (SI)	2018, 2021, 2022
HM (प्रधानाध्यापक)	2021
Highcourt LDC	2017, 2023
RPSC LDC	2011, 2016
RSSB LDC	2018, 2024

RPSC, RSSB एवं अन्य बोर्ड द्वारा राजस्थान में आयोजित विभिन्न भर्ती परीक्षाओं के प्रश्नों का व्याख्या सहित संकलन

संपादक

करण यादव सर, रतन सिंह राठौड़ सर

सह संपादक

राजवर्धन बेगड़, गंगासिंह भाटी
प्रकाश मेघवाल, अमृत लाल

प्रकाशन

अक्षांश प्रकाशन, उदयपुर (राज.)

MRP : ₹249

प्रकाशन
अक्षांश प्रकाशन
Plot No 1104, Shiksha Mandir, Sec 4, Circle,
Main Road, Udaipur

लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर से जुड़ने के लिए QR CODE स्कैन करे

TELEGRAM | INSTAGRAM | YOUTUBE | FACEBOOK | WHATSAPP

बुक कोड - AP0030

©सर्वाधिकार - अक्षांश प्रकाशन
lakshyaclassesudr@gmail.com

मुख्य वितरक - लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर
M. 9079798005, 6376491126

अक्षांश प्रकाशन ने इस पुस्तक के तथ्यों तथा विवरणों को उचित स्त्रोतों से प्राप्त किया है। इस पुस्तक में प्रकाशित सभी प्रकार की सामग्री पूर्णतः तथ्यात्मक विश्लेषण पर आधारित है। इस पुस्तक के किसी भी भाग और सामग्री को अक्षांश प्रकाशन की अनुमति और जानकारी के बिना अन्यत्र प्रकाशित या प्रिन्ट करना अनुचित है, यदि ऐसा पाया जाता है तो व्यक्ति या संस्थान स्वयं जिम्मेदार है।

अनुक्रमणिका

01	राजस्थान के प्रमुख दुर्ग	1 - 31
02	महल एवं स्मारक	32 - 40
03	हवेलियाँ, बावड़ियाँ एवं छतरियाँ	41 - 55
04	मंदिर, मस्जिद, दरगाह एवं मकबरें	56 - 78
05	लोक देवता एवं लोक देवियाँ	79 -101
06	लोक संत एवं सम्प्रदाय	102 - 122
07	मेले, पशु मेले, महोत्सव एवं त्योहार	123 - 145
08	राजस्थान की चित्रकला	146 - 166
09	हस्तशिल्प एवं लोककला	167 - 181
10	लोक नृत्य एवं नाट्य	182 - 206
11	लोक गीत एवं संगीत	207 - 217
12	लोक वाद्य यंत्र	218 - 236
13	आभूषण, वेशभूषा एवं खानपान	237 - 253
14	राजस्थान की जनजातियाँ	254 - 261
15	राजस्थान की भाषा, साहित्य एवं बोलियाँ	262 - 293
16	राजस्थान की रीति-रिवाज एवं प्रथाएँ	294 - 306
17	राजस्थान की शोध संस्थाएँ एवं संग्रहालय	307 - 320

01 राजस्थान के प्रमुख दुर्ग

◪ **वह दुर्ग जिसके चारों ओर खाई होती है, वह.... दुर्ग कहलाता है-**

JEN (Civil) Diploma-06.12.2020
III Grade (Maths-Science) -25.02.2023

(a) एरण (b) पारिख
(c) पारिध (d) धान्वन

उत्तर:- (b)

व्याख्या:-

– कौटिल्य ने दुर्गों की चार **(औदक, पार्वत, धान्वन तथा वन दुर्ग)** जबकि शुक्रनीति में दुर्गों की निम्नलिखित **नौ श्रेणियां** बताई गई हैं।

1. **औदक/जल दुर्ग**- वह दुर्ग जो विशाल जल राशि से गिरे हो।
जैसे- गागरोण दुर्ग (झालावाड़), भैसरोड़गढ़ (चित्तौड़गढ़) तथा शेरगढ़ (बारां)।
2. **धान्वन दुर्ग**- मरूस्थल या मरूभूमि में स्थित दुर्ग।
जैसे- सोनारगढ़ (जेसलमेर), जूनागढ़ (बीकानेर), भटनेर दुर्ग (हनुमानगढ़) तथा नागौर दुर्ग
3. **पारिख दुर्ग**- वह दुर्ग जिसके चारों तरफ गहरी खाई हो।
जैसे- लोहागढ़ (भरतपुर), जूनागढ़ (बीकानेर)
4. **पारिध दुर्ग**- वह दुर्ग जिसके चारों तरफ विशाल परकोटा बना हो।
जैसे- चित्तौड़गढ़, सोनारगढ़ तथा जालौर दुर्ग।
5. **वन दुर्ग**- सघन बीहड़ (कांटेदार झाड़ियों) में निर्मित दुर्ग।
जैसे- सिवाणा (बालोतरा), रणथंभौर (सवाई माधोपुर)
6. **ऐरण दुर्ग**- वह दुर्ग जहां तक पहुंचने का रास्ता कांटों, पत्थरों तथा खाइयों के कारण दुर्गम हो।
जैसे- जालौर दुर्ग, रणथंभौर दुर्ग तथा चित्तौड़गढ़ दुर्ग।
7. **गिरि दुर्ग**- ऊँची पहाड़ी पर निर्मित दुर्ग। राजस्थान के अधिकांश दुर्ग इसी श्रेणी में आते हैँ
जैसे- चित्तौड़गढ़, कुंभलगढ़ (राजसमंद), मेहरानगढ़ (जोधपुर), तारागढ़ (अजमेर), जालौर तथा सिवाणा दुर्ग (बालोतरा)
8. **सहाय दुर्ग**- जिसमें वीर तथा सदा साथ देने वाले बंधुजन रहते हो।
9. **सैन्य दुर्ग-** वह दुर्ग जहां युद्ध की योजना और रणनीति बनाने में निपुण सैनिक रहते हो। सभी दुर्गों में सैन्य दुर्ग को सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

◪ **अधोलिखित में से कौन-सा दुर्ग 'धान्वन दुर्ग' की श्रेणी में रखा जाता है?**

VDO Mains-09.07.2022

(a) चित्तौड़गढ़ दुर्ग
(b) गागरोण दुर्ग (झालावाड़)
(c) मेहरानगढ़ दुर्ग (जोधपुर)
(d) सोनारगढ़ (जैसलमेर)

उत्तर:- (d)

व्याख्या:-

–	सोनारगढ़ (जैसलमेर)	- धान्वन दुर्ग
–	गागरोण दुर्ग (झालावाड़)	- जल/औदक दुर्ग
–	मेहरानगढ़ दुर्ग (जोधपुर)	- गिरि या पर्वतीय दुर्ग
–	चित्तौड़गढ़	- यह धान्वन श्रेणी को छोड़कर शेष सभी श्रेणी का दुर्ग हैं।

◪ **औदक दुर्ग से अभिप्राय है-**

वनपाल-06.11.2022 (S-1)

(a) गिरि दुर्ग (b) धान्वन दुर्ग
(c) सैन्य दुर्ग (d) जल दुर्ग

उत्तर:- (d)

व्याख्या –

– **औदक दुर्ग से अभिप्राय है-** जल दुर्ग है।
– औदक दुर्ग (जल दुर्ग)- वह किला जो विशाल जलराशि से घिरा हुआ होता है।
– गागरोण, शेरगढ़ (बारां) तथा भैसरोड़गढ़ दुर्ग जल /औदक दुर्ग के श्रेष्ठ उदाहरण है।

◪ सुमेलित कीजिए-

पशु परिचर 01.12.2024 (S-I)

किले के प्रकार	किले के नाम
(A) धान्वन दुर्ग	(1) भरतपुर का किला
(B) वन दुर्ग	(2) चित्तौड़गढ़ का किला
(C) ऐरण दुर्ग	(3) सिवाणा का किला
(D) पारिख दुर्ग	(4) जैसलमेर का किला

कूट:

(a) A-4, B-2, C-3, D-1
(b) A-3, B-2, C-4, D-1
(c) A-1, B-2, C-3, D-4
(d) A-4, B-3, C-2, D-1

उत्तर:- (d)

व्याख्या:-
- उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

◪ **जैसा कि राजस्थान के प्राचीन ग्रंथों में उल्लिखित है राजस्थान का वह किला जहाँ युद्ध की योजना और रणनीति बनाने में निपुण सैनिक रहते थे उसे कहा जाता था- (निम्न में से सबसे उपयुक्त विकल्प चुनें:)**

CET 12th Level Exam-2024 (1st Shift) 22.10.2024

(a) सैन्य दुर्ग (b) पारीख दुर्ग
(c) पारिध दुर्ग (d) सहाय दुर्ग

उत्तर:- (a)

व्याख्या –
- व्यूह रचना में दक्ष वीरों के द्वारा रक्षित दुर्ग जो अभेद्य हो, **सैन्य दुर्ग** कहलाता है।
- **शुक्रनीति** में वर्णित दुर्गों की सभी **नौ श्रेणियों** में से **सैन्य दुर्ग** को सर्वश्रेष्ठ दुर्ग माना गया है।

◪ **स्थान, स्थापत्य और उपयोगिता के आधार पर किस प्रकार के दुर्ग, जल से घिरे हुए हैं?**

EO & RO-14.05.2023 (S - I)

(a) गिरि दुर्ग (b) औदक दुर्ग
(c) ऐरण दुर्ग (d) सैन्य दुर्ग

उत्तर:- (b)

व्याख्या –

औदक दुर्ग (Water Fort)-
- यह दुर्ग जो विशाल जल राशि (नदी, झील, समुद्र) से घिरा होता है।
- उदाहरण - **गागरोन किला**, जो जल दुर्ग के रूप में प्रसिद्ध है।

गिरि दुर्ग (Hill Fort)-
- यह प्रकार के दुर्ग पहाड़ियों या ऊँचे स्थानों पर स्थित होते हैं। ऐसे दुर्ग ऊँचाई पर बने होते हैं, जिससे शत्रु को आक्रमण करना कठिन हो जाता है।
- उदाहरण - **मेहरानगढ़ किला, तारागढ़ किला।**

ऐरण दुर्ग (Forest Fort):
- यह दुर्ग जंगलों में स्थित होते हैं। इनकी विशेषता यह होती है कि ये दुर्ग घने जंगलों में स्थित होते हैं, जो दुश्मन के लिए इन तक पहुँचने में कठिनाई उत्पन्न करते हैं।
- **उदाहरण - सिवाना का दुर्ग।**

सैन्य दुर्ग (Military Fort)-
- यह दुर्ग रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण स्थानों पर बनाए जाते हैं। इनका मुख्य उद्देश्य सैनिकों के लिए एक सुरक्षित केंद्र प्रदान करना और किसी क्षेत्र की सुरक्षा सुनिश्चित करना होता है।
- यह दुर्ग युद्ध के समय सेना को समर्थन देने और आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए बनाए जाते थे।
- **चित्तौड़ दुर्ग** धान्वन श्रेणी के दुर्ग को छोड़कर सभी श्रेणी का दुर्ग है।

◪ **निम्न में से कौन-सा राजस्थान का गिरि दुर्ग नहीं है?**

RAS Pre-01.10.2023

(a) गागरोण (b) जालौर
(c) चित्तौड़गढ़ (d) सिवाणा

उत्तर:- (a)

व्याख्या –

गागरोण दुर्ग
- दक्षिण-पूर्वी राजस्थान के सबसे प्राचीन व विकट दुर्ग में गागरोण दुर्ग भी **एक जल दुर्ग या औदक दुर्ग** है, जो **कालीसिंध और आहु नदी** के संगम पर है, जो परमार शासकों द्वारा निर्मित। (**11**वीं सदी में)।

महल एवं स्मारक

◪ **हवामहल का निर्माण करवाया गया-**

PSI - 15.9.2021
PSI (मोटर वाहन) - 12.02.2022
वनरक्षक - 11.12.2022 (II)
राजस्थान पुलिस कॉन्स्टेबल - 13.06.2024 (II)
LDC - 11.08.2024

(a) राजा भगवानदास
(b) राजा मानसिंह
(c) सवाई प्रतापसिंह
(d) महाराजा सवाई जयसिंह

उत्तर:- (c)

व्याख्या-
हवामहल (जयपुर)
- जयपुर में **5 मंजिला** हवामहल का निर्माण **सवाई प्रतापसिंह** ने 1799 ई. में करवाया।
- 88 फीट ऊँचे इस महल में **953 खिड़कियाँ व 365 जाली झरोखे** हैं।

◪ **हवामहल, जयपुर के बारे में निम्नलिखित बयानों पर विचार करें और नीचे दिये गए कोड में से प्रश्न का उत्तर दें-**

राजस्थान पुलिस कॉन्स्टेबल -15.07.2018
पटवार - 23.10.2021 (Shift-II)

1. हवामहल एक आठ मंजिली संरचना है।
2. हवामहल महाराजा सवाई प्रतापसिंह द्वारा बनवाया गया था।
3. हवामहल में 953 झरोखे या जटिल डिजाइनों से सजाई गई खिड़कियाँ है।
हवामहल के बारे में ऊपर दिये गए बयानों में से कौन-सा/से बयान सही है/हैं-

(a) 1, 2 और 3
(b) 1 और 2
(c) 1 और 3
(d) 2 और 3

उत्तर:- (d)

व्याख्या-
हवामहल (जयपुर)
- जयपुर में **5 मंजिला** हवामहल का निर्माण **सवाई प्रतापसिंह** ने 1799 ई. में करवाया।
- 88 फीट ऊँचे इस महल में **953 खिड़कियाँ व 365 जाली झरोखे** हैं।
- **आकार -** श्रीकृष्ण के मुकुट के समान या पिरामिडनुमा।
- यह महल **राधा-कृष्ण** को समर्पित है।
- हवामहल का **वास्तुकार उस्ताद लालचन्द** है।
- **आनन्द पोल -** हवामहल का प्रवेश द्वार।
- इसका निर्माण **बलुआ पत्थर व चूने** से किया गया।
- **एडविन आर्नोल्ड** ने लिखा कि अलादीन का जिन भी इससे अधिक सुन्दर महल का सर्जन नहीं कर सकता।

पाँच मंजिला -
- i. शरद या **प्रताप** मंदिर (सबसे निचली)
  ii. रतन मंदिर iii. विचित्र मंदिर
  iv. प्रकाश मंदिर v. हवा मंदिर (सबसे ऊपरी)
- हवा महल को **वर्ष 1968 में संरक्षित स्मारक** घोषित किया गया।

◪ **जयपुर का हवामहल किस वास्तुकार द्वारा अभिकल्पित किया गया था?**

राज. पुलिस कॉन्स्टेबल परीक्षा-2025

(a) लाल चंद उस्ताद
(b) मीर तुजुमूल हुसैन
(c) विद्याधर भट्टाचार्य
(d) सैमुअल जैकब

उत्तर:- (a)

व्याख्या-
- उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

◪ **9 मंजिला ऐतिहासिक विजय स्तंभ (चित्तौड़गढ़, राजस्थान) किससे बना है?**
निम्नलिखित विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर चुनें:
पशु परिचर - 2024 (2nd Shift) 01.12.2024
(a) लाल बालु पत्थर और सफेद संगमरमर
(b) लाल संगमरमर और सफेद बालु पत्थर
(c) केवल काला पत्थर
(d) केवल लाल पत्थर

उत्तर:- (a)

व्याख्या-
विजय-स्तंभ
– राणा कुंभा ने नौ मंजिला "विजय-स्तंभ" का निर्माण करवाया था।
– मालवा और गुजरात के मुस्लिम शासकों को हराने की अपनी जीत को अमर करने के लिए, विजय स्तम्भ को चित्तौड़गढ़ किले के अंदर बनाया गया है।
– विजय स्तम्भ आंशिक रूप से लाल बलुआ पत्थर और आंशिक रूप से सफेद संगमरमर से बनाया गया था।

◪ **फतेह प्रकाश महल का निर्माण किस किले में कराया गया था?**
राजस्थान पुलिस कॉन्स्टेबल-7.11.2020 (II)
(a) चित्तौड़गढ़ (b) मेहरानगढ़
(c) जैसलमेर (d) नाहरगढ़

उत्तर:- (a)

व्याख्या-
फतेह प्रकाश महल-
– फतेह प्रकाश महल राजस्थान के प्रसिद्ध **चित्तौड़गढ़ किले** के भीतर स्थित एक भव्य ऐतिहासिक भवन है।
– इस महल का **निर्माण राणा फतेहसिंह द्वारा** करवाया गया था।
– यह महल राजस्थानी वास्तुकला का सुंदर उदाहरण है, जिसमें कई गलियारे और स्तंभ राजपूत शैली में निर्मित हैं।
– यह महल चित्तौड़गढ़ किले का हिस्सा है, जो कि **यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल** के रूप में मान्यता प्राप्त है।
– चित्तौड़गढ़ किला न केवल राजस्थानी इतिहास और संस्कृति का प्रतीक है, बल्कि यह वीरता और बलिदान की अनेक गाथाओं का भी साक्षी रहा है।

◪ **कीर्ति स्तम्भ, चित्तौड़गढ़ का निर्माण किसके द्वारा किया गया था?**
BSTC परीक्षा-2025 (द्वितीय पारी)
(a) जैन तीर्थकर (b) जैन मुनि
(c) जैन व्यापारी (d) जैन राजा

उत्तर:- (c)

व्याख्या:-
– जैन कीर्ति स्तम्भ चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) में स्थित हैं।
– इसका निर्माण 12वीं शताब्दी में जैन व्यापारी जीजाशाह बघेरवाल ने करवाया था।

◪ **कीर्ति स्तंभ राजस्थान के किस शहर में स्थित है?**
राज. पुलिस कॉन्स्टेबल परीक्षा-2025
(a) उदयपुर (b) अजमेर
(c) चित्तौड़गढ़ (d) बीकानेर

उत्तर:- (c)

व्याख्या:-
– उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

◪ **आमेर पैलेस स्थित है-**
राजस्थान पुलिस-13.5.2022 (S-I)
(a) प्रतापगढ़ (b) जालौर
(c) जयपुर (d) उदयपुर

उत्तर:- (c)

व्याख्या-
आमेर महल
– जयपुर में आमेर पैलेस स्थित है।
– **निर्माण -** आमेर की **मावठा झील** के पास की **कालीखोह** पहाड़ी पर कच्छवाहा नरेश **मानसिंह** द्वारा 1592 ई. में बनाया गया था।
– ये **हिन्दू-मुस्लिम** शैली के समन्वित रूप है।
– **मिर्जा राजा जयसिह** ने 1639 ई. में **गणेश पोल** का निर्माण करवाया। फर्ग्यूसन के अनुसार गणेश पोल दरवाजा स्थापत्य एवं चित्रकला के लिए विश्व प्रसिद्ध है।

पटवों की हवेली कहाँ स्थित है?

कर सहायक - 14.10.2018
VDO Mains - 09.07.2022

(a) उदयपुर (b) जैसलमेर
(c) जोधपुर (d) झुन्झूनूँ

उत्तर:- (b)

व्याख्या:-
जैसलमेर की हवेली –
– यहां की हवेलियों में पीले पत्थरों पर कमल, वृक्ष, गुलाब, कलश, ज्यामितिक आकारों जैसे गोलाकार, चौरस, अष्टकोण, पंचकोष, षट्कोण तथा त्रिकोण की खुदाई काम हुआ है।
– जैसलमेर की हवेलियाँ पत्थर की **जाली व कटाई** के कारण प्रसिद्ध है।
– जैसलमेर को **'हवेलियों का नगर'** कहते हैं।

पटवों की हवेली
– यह हवेली **पाँच मंजिला** है।
– **निर्माण-** जैसलमेर नगर के बीचों-बीच में स्थित इस हवेली का निर्माण **सेठ गुमानचन्द पटवा** द्वारा **18**वीं सदी के उत्तरार्द्ध में करवाया गया था।
– इसकी पहली मंजिल की **आकृति जहाज** के जैसी है।
– दूसरी मंजिल आयताकार है और इसकी पाँचवीं मंजिल पर स्वतंत्र रथ आकार के जाली झरोखे है।
– इस हवेली में **हिन्दू, ईरानी, यहूदी व मुगल** स्थापत्य कला का सुन्दर समन्वय है।
– यह हवेली विश्व की एकमात्र हवेली है, जिसकी **खिड़कियाँ पत्थर की** बनी हुई हैं।

निम्नलिखित में से कौन-सी प्रसिद्ध हवेली जैसलमेर में स्थित है?

पटवार प्रथम पारी 17 अगस्त, 2025
4th Grade - 2nd Shift - 21.09.2025

(a) रामपुरिया हवेली (b) बागोर की हवेली
(c) पटवों की हवेली (d) भामाशाह की हवेली

उत्तर:- (c)

व्याख्या:-
– उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

सालिम सिंह की हवेली और नथमल की हवेली में स्थित हैं-

RAS 2023,
राजस्थान पु. कॉन्स्टेबल-14.07.2018 (I)
Asst. Agriculture Officer: 29.01.2013
House Keeper -9.7.2022
REET L-II (Re-Exam), 16.10.2021

(a) बाड़मेर (b) बीकानेर
(c) चित्तौड़गढ़ (d) जैसलमेर

उत्तर:- (d)

व्याख्या:-
– सालिम सिंह की हवेली और नथमल की हवेली जैसलमेर में स्थित हैं।

नथमलजी की हवेली
– जैसलमेर की इस हवेली का निर्माण **महारावल बैरीसाल** के समय हुआ है।
– इसके शिल्पकार '**हाथी**' **एवं** '**लालू**' थे।
– जैसलमेर के दो शिल्पकार भाई हाथी और लुलु ने अपनी शिल्पकला, विशालता और अद्भुत नक्काशी से किस हवेली को आकार प्रदान किया, जो दो शिल्पकारों की अमर कृति को दर्शाती है।
– इसका निर्माण **1881-85 ई.** के बीच करवाया गया था।
– यह हवेली पाँच मंजिला **पीले पत्थर** से निर्मित है।
– सबसे ऊपरी मंजिल पर रथाकार झरोखे हैं।

सालिमसिंह की हवेली
– जैसलमेर राज्य के प्रधानमंत्री **सालिमसिंह मेहता** ने 1815 ई. में इस हवेली का निर्माण करवाया था।
– इस हवेली में सात खण्ड पत्थर के और ऊपर दो खण्ड लकड़ी के बने हैं।
– वर्तमान में इसके ऊपर से दो लकड़ी के बने खण्ड उतार दिए गए हैं।

– लकड़ी के ऊपर बनाए गए इस खण्ड को **शीशमहल व रंगमहल** कहते हैं।
– इसकी पाँचवीं मंजिल को **मोतीमहल या जहाज महल** कहते है।
– इसके ऊपर लकड़ी की दो मंजिलें और भी बनाई गयी थी, जो क्रमश**: शीशमहल और रंगमहल** कहलाती थी लेकिन राजकीय कोप के कारण तुड़वा दिया गया था।
– इस हवेली को **9 खण्डों वाली हवेली** भी कहते हैं।

बच्छावतों, रामपुरिया, गुलेच्छा, सेठिया की हवेलियाँ राजस्थान में कहाँ स्थित हैं?

Librarian III Grade -11.9.2022
JEN (Diploma) Exam- 21.08.2016

(a) जैसलमेर (b) सीकर
(c) जोधपुर (d) बीकानेर

उत्तर:- (d)

व्याख्या:-
बीकानेर की हवेलियाँ –

i. रामपुरिया की हवेलियाँ
– ये हवेलियाँ **रामपुरिया मोहल्लों** की एक गली में क्रमबद्ध रूप से निर्मित हैं।
– यह हवेलियाँ अपने **विशाल आँगन और स्थापत्य कला** के कारण विश्व विख्यात हैं।

ii. बच्छावतों की हवेली
– **बीकानेर की सबसे पुरानी हवेली** जो लाल पत्थर से निर्मित।
– इस हवेली का निर्माण 1593 ई. में **कर्णसिंह बच्छावत** ने करवाया था।

iii. पूनमचंद जी कोठारी की हवेली
– यह हवेली **तितलीनुमा** है।
– इस हवेली में सारा **पत्थर दुलमेरा** का है।
– इस हवेली के निर्माता **भूधर जी चलवा** थे।

iv. रिखजी बागड़ी की हवेली - 3 मंजिला

v. लक्ष्मीनारायण डागा की हवेली
– इसे **'गोल्डन किंग'** की हवेली के रूप में जाना जाता है।

vi. भैंरोदान जी कोठारी की हवेली
– शाहजहाँ कालीन मुगल इमारतों की याद को ताजा कर देती है।

बीकानेर की अन्य हवेलियाँ-
– मोहता, मूंदड़ा, गुलेच्छा, बागड़ी, रिखजी, कोठारी, सेठिया, बांठिया, ओसवाल एवं माहेश्वरी की हवेलियाँ तथा सेठ चाँदमल ढड्ढा की हवेली बीकानेर की महत्त्वपूर्ण हवेलियाँ हैं।
– वर्ष 2012 में बीकानेर की हवेलियों को **'वर्ल्ड मोन्यूमेंट वॉच'** कार्यक्रम में शामिल किया गया था।

राजस्थान में रामपुरिया हवेली किस स्थान पर स्थित है?
नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर का चुनाव करें:

4th Grade - 1st Shift - 19.09.2025

(a) उदयपुर (b) बीकानेर
(c) झुंझुनू (d) जोधपुर
(e) अनुत्तरित प्रश्न

उत्तर:- (b)

व्याख्या:-
– उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

बच्छावत की हवेली कौन-से शहर में स्थित है?
निम्नलिखित विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर चुनें:

पशु परिचर (1st Shift) 01.12.2024

(a) सिवाना
(b) जयपुर
(c) बीकानेर
(d) चित्तौड़गढ़

उत्तर:- (c)

व्याख्या:-
– बच्छावतों, रामपुरिया, गुलेच्छा, सेठिया की हवेलियाँ, **राजस्थान के बीकानेर में** स्थित हैं।
– बीकानेर की प्रसिद्ध हवेली 'बच्छावतों की हवेली' करणसिंह बच्छावत द्वारा बनाई गई थी।

चारचौमा मंदिर राजस्थान के किस जिले में है?

वनरक्षक - 12.12.2022 (S-I)
II Grade Teacher -31.10.2018
JEN (Electric) Degree 18.05.2022

(a) कोटा (b) बूंदी
(c) झालावाड़ (d) सीकर

उत्तर:- (a)

व्याख्या-
चारचौमा शिवालय (कोटा)
- चारचौमा शिवालय कोटा में **गुप्तकालीन** समय का प्राचीन शिवालय है।
- कोटा राज्य के इतिहासकार डॉ. मथुरालाल शर्मा के अनुसार यह शिव मंदिर कोटा राज्य का सबसे पुराना देवालय है।
- इस मंदिर में **चतुर्मुखी शिवालय** है।

बाडोली के घटेश्वर मंदिर में शिव के किस स्वरूप को उत्कीर्ण किया गया है?

रसायनज्ञ परीक्षा-06.08.2024

(a) बालरूप (b) नटराज
(c) पशुपति (d) अर्द्धनारीश्वर

उत्तर:- (b)

व्याख्या-
बाड़ोली के शिव मंदिर (चित्तौड़गढ़)
- बाड़ोली के शिव मंदिर **चित्तौड़गढ़ जिले** में **चंबल एवं बामनी नदियों के संगम पर** स्थित है।
- इसका निर्माण हूण शासक **मिहिरकुल** ने **छठी शताब्दी** में करवाया था।
- यह मंदिर **पंचायतन शैली** पर आधारित है।
- यहाँ 9 छोटे बड़े मंदिरों का समूह है जिसमें से सबसे प्रमुख मंदिर 'घाटेश्वर महादेव' का है, इस मंदिर का निर्माण 9वीं शताब्दी में **हूण शासक तोरमाण के पुत्र मिहिरकुल** ने करवाया था। (स्रोत- राजस्थान का इतिहास एवं संस्कृति कक्षा-10 मा. शि. बो. अजमेर)
- इस मंदिर का निर्माण **गुर्जर प्रतिहार काल** में हुआ है, पर इसकी **शैली गुर्जर प्रतिहार शैली** से भिन्न है।
- 1821 ई. में कर्नल जेम्स टॉड इस मंदिर को सर्वप्रथम प्रकाश में लाये थे।
- **कुख्यात मूर्ति तस्कर वामन नारायण घीया** ने यहाँ से **नटराज** की मूर्ति चुराई थी।
- कला मर्मज्ञ फर्ग्यूसन ने बाडोली के मन्दिरों को शिल्प और स्थापत्य की दृष्टि से अद्वितीय माना है।
- विशेषकर शेषशायी विष्णु की मूर्ति के लिए लिखा है कि वह मेरी देखी हुई हिन्दू मूर्तियों में सर्वोत्कृष्ट है।
- यह प्रतिमा अब **कोटा के राजकीय संग्रहालय** में संरक्षित है।

बाडोली के शिव मन्दिर का निर्माण किसने करवाया?

2nd Grade GK – 2025
CET: 08.01.2023 (S-1)

(a) तोरमाण (b) मिहिरकुल
(c) भोज परमार (d) भोज प्रतिहार

उत्तर:- (b)

व्याख्या-
- बाडोली के शिव मन्दिर का निर्माण **मिहिरकुल** ने करवाया।
- मंदिर गुर्जर-प्रतिहार साम्राज्य के दौरान बनाया गया है।
- यह बाडोली प्राचीन वास्तुकला की दृष्टि से राजस्थान का प्रसिद्ध स्थान है।
- अलंकृत मण्डप, तोरणद्वार, मूर्तियों की मुद्राएँ, लोच, प्रवाह, शिव का प्रबल रूप आदि इसकी विशेषताएँ हैं।

दिलवाड़ा मंदिर समूह के पाँच मंदिरों में से कौन-सा मंदिर शामिल नहीं है?

राजस्थान पुलिस-13.5.2022 (S-II)

(a) विमलवसही (b) लूणवसही
(c) पशुपतिनाथ (d) पीतलहर

उत्तर:- (c)

व्याख्या-

दिलवाड़ा जैन मंदिर समूह (आबू)

- अवस्थिति - आबू, सिरोही जिले में।
- यह मुख्यतः 5 मंदिरों का समूह है।
- यहाँ पर **पाँच श्वेतांबर मंदिर के साथ एक दिगम्बर मंदिर** भी है।
- ये मंदिर राजस्थान- **गुजरात की सोलंकी (चालुक्य) शैली** में निर्मित है।
- **प्रथम मंदिर- विमलशाही मंदिर-**
- इसका निर्माण 1031 ई. में गुजरात के चालुक्य राजा भीमदेव के मंत्री और सेनापति विमल शाह ने करवाया था।
- इसके शिल्पकार कीर्तिकर थे।
- सफ़ेद संगमरमर से निर्मित यह मंदिर प्रथम जैन तीर्थंकर आदिनाथ को समर्पित है।
- **द्वितीय मंदिर - लुणवसही मंदिर-**
- इसका निर्माण 1230 ई. में गुजरात के सोलंकी राजा भीमदेव द्वितीय के मंत्री वास्तुपाल व तेजपाल करवाया था।
- इसके शिल्पी शोभन देव था।
- यहाँ गर्भगृह में जैन तीर्थंकर नेमिनाथ की काले रंग की प्रतिमा स्थापित है।
- **तृतीय मंदिर - पार्श्वनाथ या चौमुखा मंदिर-**
- इसका निर्माण मंडलिक एवं उसके परिवारजनों ने 1458-59 में करवाया, जो 23वें जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ को समर्पित है।
- **चतुर्थ मंदिर - पीतलहर मन्दिर (ऋषभ देव मन्दिर)-**
- यह मन्दिर प्रथम जैन तीर्थंकर ऋषभदेव या आदिनाथ को समर्पित है।
- इस मन्दिर में स्थापित भगवान आदिनाथ की प्रतिमा पंच धातु निर्मित है, लेकिन मुख्य रूप से पीतल का उपयोग होने के कारण इसे पीतलहर नाम से जाना जाता है।
- **पंचम (अंतिम) मंदिर - महावीर स्वामी मन्दिर,**
- देलवाड़ा के पाँच जैन मन्दिरों के समूह में यह सबसे छोटा एवं सामान्य प्रकार का है, जो अन्तिम तीर्थकर महावीर स्वामी को समर्पित है ।

◪ दिलवाड़ा, माउंट आबू के लूणवसहि नेमिनाथ मंदिर के मुख्य शिल्पी कौन थे?

स्कूल व्याख्याता - 21.10.2022

(a) शोभनदेव (b) देपाक
(c) वास्तुपाल (d) जैता

उत्तर:- (a)

व्याख्या-

- **लूणवसही मन्दिर-** इसका शिल्पी शोभन देव था।
- इस मन्दिर का निर्माण गुजरात के सोलंकी राजा भीम देव द्वितीय के मंत्री वास्तुपाल एवं तेजपाल ने 1230 ई. में करवाया था।
- इसके गर्भगृह में जैन तीर्थंकर नेमीनाथ की काले रंग की प्रतिमा स्थापित है। गर्भगृह के प्रवेशद्वार के दोनों ओर देवरानी एवं जेठानी के दो आले बने हुए हैं, जिनमें तीर्थंकर आदिनाथ एवं शान्तिनाथ की प्रतिमाएं लगी हुई है।
- इसके प्रदक्षिणापथ में 52 कुलिकाएं है, जिसमें विभिन्न तीर्थकरों की प्रतिमाएं उत्कीर्ण हैं।

◪ सिरोही में दिलवाड़ा जैन मंदिर किस पत्थर से तराशे गए हैं?

4th Grade-1st Shift-21.09.2025

(a) बलुआ पत्थर (b) सफेद संगमरमर
(c) ग्रेनाइट (d) चूना पत्थर
(e) अनुत्तरित प्रश्न

उत्तर:- (b)

व्याख्या-

- उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

◪ 'त्रिपुरा सुंदरी मंदिर' राजस्थान में कहाँ स्थित है? निम्नलिखित विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर चुनें:

पशु परिचर - 2024 (2nd Shift) 01.12.2024

(a) बांसवाड़ा
(b) चुरू
(c) सीकर
(d) बीकानेर

उत्तर:- (a)

लोक देवता एवं लोक देवियाँ

◪ निम्नलिखित में से कौन पंच पीर में शामिल नहीं है?

पटवार प्रथम पारी 17.08. 2025

पशु परिचर - 2024 (2nd Shift) 2024

(a) हड़बूजी (b) तेजाजी

(c) रामदेवजी (d) पाबूजी

उत्तर:- (b)

व्याख्या:-

मारवाड़ के पंच पीर –

– 1. पाबूजी 2. हड़बूजी

3. रामदेव जी 4. मेहा जी

5. गोगाजी

"पाबू, हड़बू, रामदेव, मांगलिया मेहा
पाँचों पीर पधारजो, गोगा जी जेहा।।"

◪ तेजाजी का जन्म स्थल है-

राज. पुलिस कॉन्स्टेबल परीक्षा-2025

II Grade GK - 22.12.2022

द्वितीय श्रेणी शिक्षक-2014

III Grade (Hindi) -26.02.2023

लिपिक ग्रेड-II (LDC) परीक्षा – 2023

(a) ददरेवा (b) खड़नाल

(c) आसींद (d) कोलू

उत्तर:- (b)

व्याख्या:-

– **तेजाजी का** जन्म - 1073 ई., माघ शुक्ला चतुदर्शी को खरनाल में नागवंशीय जाट में हुआ।
– उपनाम - काला और बाला के देवता, कृषि कार्य़ों के उपकारक देवता, गौरक्षक देवता, **शिवजी का अवतार, नागों का देवता**।
– पिता - ताहड़जी जाट
– माता - **रामकुँवरी**
– पत्नी – पेमलदे–पनेर–अजमेर (रायचंद की पुत्री)
– सवारी - लीलण घोड़ी **/ सिणगारी**
– तेजा गीत - किसान खेतों में हल जोतते समय तेजाजी के गीत गाते हैं।
– तेजाजी ने लाछा गुर्जरी की गायों को मेर (वर्तमान आमेर) के मीणाओं से छुड़ाई।
– मेला - **प्रतिवर्ष तेजादशमी (भाद्रपद शुक्ला दशमी)** को परबतसर में भव्य पशु मेला भरता है जो आय की दृष्टि से राजस्थान का सबसे बड़ा पशु मेला है।
– **मंदिर का निर्माण – अभयसिंह ने करवाया।**
– प्रमुख पूजा स्थल - सेंदरिया, ब्यावर, भावतां, सुरसरा, परबतसर, खरनाल, **बासी दुगारी में कर्मस्थली है**।
– सर्प ने डसा, सेंदरिया गाँव में मृत्यु हुई, सुरसुरा जहां इनकी पत्नि पेमल सती हुई।
– तेजाजी का **नया मंदिर बनाने के लिए सुरसुरा से ज्योति** लाई जाती है।

◪ तेजाजी मेला हर साल राजस्थान में निम्नलिखित में से किस स्थान पर आयोजित किया जाता है?

PTET - 2023

(a) भिवाड़ी (b) उदयपुर

(c) ब्यावर (d) परबतसर

उत्तर :- (d)

व्याख्या :-

– उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

◪ गोगाजी के अलावा कौन-से लोक देवता को साँपों के देवता के रूप में पूजा जाता है? निम्नलिखित विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर चुनें:

पशु परिचर - 2024 (1st Shift) 02.12.2024

(a) मल्लीनाथजी (b) पाबूजी

(c) रामदेवजी (d) तेजाजी

उत्तर:- (d)

व्याख्या:-
तेजाजी
– गोगाजी के अलावा **तेजाजी को भी साँपों के देवता के रूप** में पूजा जाता है।

◪ **कौन-से लोक देवता को 'धौलियावीर' के नाम से भी जाना जाता है?**
वरिष्ठ कम्प्यूटर अनुदेशक 19.06.2022
(a) पाबूजी (b) कबीर
(c) गोगाजी (d) तेजाजी
उत्तर:- (d)

व्याख्या:-
– तेजाजी को **'धौलियावीर'** के नाम से भी जाना जाता है।
– **पाबूजी को** 'ऊँटों के देवता' के रूप में जाना जाता है।
– **कबीर -**वे एक प्रसिद्ध संत हैं।
– **गोगाजी -** सर्प रक्षक देवता के रूप में पूजे जाते हैं।

◪ **लाछा गुजरी की गायें चोरी हो जाने पर किस लोक देवता ने उसकी सहायता की?**
राजस्थान पुलिस कॉन्स्टेबल-15.07.2018 (II)
(a) बाबा रामदेव (b) पाबूजी
(c) गोगाजी (d) तेजाजी
उत्तर:- (d)

व्याख्या:-
– तेजाजी ने लाछा गुर्जरी की गायों को **मेर (वर्तमान आमेर)** के मीणाओं से छुड़ाई।

◪ **किस लोक देवता की पत्नी उनकी मृत्यु के बाद सती हो गई?**
II Grade GK (संस्कृत शिक्षा) -19.02.2019
(a) मल्लीनाथ (b) हरबूजी
(c) तेजाजी (d) देवजी
उत्तर:- (c)

व्याख्या:-
– पेमल वीर तेजाजी की पत्नी थीं।
– वह **पनेर के सरदार झांझर गोत्र के रायमल की बेटी** थी।
– सुरसुरा गांव में लाछा गुर्जरी की गायों को बचाने के चक्कर में तेजाजी घायल हो गए और सांप के काटने से उनकी मौत हो गई और **तेजाजी की मृत्यु के बाद उनकी पत्नी पेमल सती** हो गई।

◪ **उस स्थान को चिह्नित कीजिए जो किसी भी प्रकार तेजाजी से संबंधित नहीं है?**
AEN Exam 16.12.2018
(a) पिचियाक (b) परबतसर
(c) सुरसुरा (d) खड़नाल
उत्तर:- (a)

व्याख्या:-
तेजाजी
– जन्म - खरनाल में नागवंशीय जाट में हुआ।
– मेला - प्रतिवर्ष तेजादशमी (भाद्रपद शुक्ला दशमी) को परबतसर में भव्य पशु मेला भरता है।
– **सर्प ने डसा, सेंदरिया गाँव में मृत्यु हुई,** सुरसुरा जहां इनकी पत्नि पेमल सती हुई।

◪ **वीर तेजाजी का मुख्य मंदिर राजस्थान में निम्नलिखित में से किस स्थान पर स्थित है?**
4th Grade - 1st Shift - 20.09.2025
(a) रणथंभौर (b) कुशलगढ़
(c) परबतसर (d) बागोर
(e) अनुत्तरित प्रश्न
उत्तर:- (c)

व्याख्या:-
– उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

◪ **मंदिर श्री वीर तेजाजी, जो जोधपुर राज्य के महाराजा अभयसिंह द्वारा बनवाया गया था, राजस्थान के निम्नलिखित में से किस जिले में स्थित हैं?**
राजस्थान पुलिस कॉन्स्टेबल-16.05.2022 (I)
(a) प्रतापगढ़ (b) नागौर
(c) जालौर (d) पाली
उत्तर:- (b)

लोक संत एवं सम्प्रदाय

18वीं शताब्दी में राजस्थान में रैण, शाहपुरा, सिंहस्थल, खेड़ापा किस सम्प्रदाय के प्रमुख केन्द्र थे?

III Grade (Urdu) -28.02.2023

(a) मीरादासी (b) रामस्नेही
(c) दादूपंथी (d) रामदासी

उत्तर:- (b)

व्याख्या-
- **रामस्नेही संप्रदाय** की स्थापना **संत रामचरण** ने की थी।
- इस संप्रदाय का प्रमुख केंद्र **शाहपुरा (भीलवाड़ा)** था।

राजस्थान में रामस्नेही सम्प्रदाय की प्रमुख पीठें -

(i) रैण शाखा
- मेड़ता सिटी (नागौर)
- संस्थापक - संत दरियावजी

(ii) खेड़ापा शाखा
- जोधपुर
- संस्थापक - संत रामदासजी

(iii) सिंहथल शाखा
- बीकानेर
- संस्थापक - हरिराम दास जी

निम्नलिखित में से कौन रामस्नेही संप्रदाय के संस्थापक थे?

2nd Grade GK - 2025

(a) संत मावजी
(b) संत चरणदास
(c) महर्षि नवलराम
(d) संत रामचरण
(e) अनुत्तरित प्रश्न

उत्तर:- (d)

व्याख्या-
- उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

रामस्नेही सम्प्रदाय अपना फूलडोल महोत्सव किस स्थान पर मनाते हैं?

Agriculture Officer - 29.01.2013
REET (Level - I, S-I) - 23.07.2022

(a) भीलवाड़ा (b) जोधपुर
(c) शाहपुरा (d) कोटा

उत्तर:- (c)

व्याख्या-
- रामस्नेही सम्प्रदाय अपना **फूलडोल महोत्सव राजस्थान के भीलवाड़ा जिले के शाहपुरा** में मनाते हैं।
- यह महोत्सव **संप्रदाय की प्रधान पीठ पर आयोजित** किया जाता है।

'फूलडोल उत्सव' मनाया जाता है-

जेल प्रहरी 20.10.2018
पटवार-23.10.2021 (Shift -I)
II Grade Maths) 2011
स्कूल व्याख्याता (Physical Edu.)-21.10.20221

(a) परनामी पंथ द्वारा (b) वल्लभ पंथ द्वारा
(c) रामस्नेही पंथ द्वारा (d) सतनाम पंथ द्वारा

उत्तर:- (c)

व्याख्या-
- फूलडोल उत्सव चैत्र कृष्ण एकम् (धुलेण्डी) से पंचमी तक (पाँच दिन) मनाया जाता है।

रामस्नेही सम्प्रदाय की शाहपुरा शाखा के संस्थापक कौन थे?

Head Master -11.10.2021

(a) जैमलदासजी (b) रामचरणजी
(c) रामदासजी (d) दरियावजी

उत्तर:- (b)

व्याख्या-
संत रामचरण जी
- इन्होंने शाहपुरा में 1751 ई. में रामस्नेही सम्प्रदाय की मुख्य गद्दी स्थापित की।
- इन्होंने भगवान राम की निर्गुण उपासना की थी।

संत दरियावजी रामस्नेही संप्रदाय की किस शाखा के प्रवर्तक थे?

REET L-II, 26.9.21

(a) शाहपुरा
(b) सिंहथल
(c) रेण
(d) खेड़ापा

उत्तर:- (c)

व्याख्या-
- संत दरियाव जी रामस्नेही संप्रदाय की रेण शाखा के प्रवर्तक थे।
- संत दरियाव जी का **जन्म-जैतारण (ब्यावर)** में हुआ था।
- संत दरियाव जी की मृत्यु- रैण (नागौर) में हूई।
- गुरु- प्रेमनाथ जी (बालकनाथ)।
- इन्होंने **योग मार्ग का उपदेश** दिया।

पुस्तक "अनुभववाणी" में निम्नलिखित में से किसके आध्यात्मिक शिक्षण निहित हैं? निम्नलिखित विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर चुनें:

पशु परिचर - 2024 (1st Shift) 01.12.2024

(a) संत मावजी (b) महर्षि नवलराम
(c) रामचरण (d) संत राणाबाई

उत्तर:- (c)

व्याख्या-
संत रामचरण जी – मृत्यु – शाहपुरा में 1798 ई.
- जन्म -1719 ई. में माघ शुक्ल चतुर्दशी को सोड़ा गाँव (टोंक) में।
- इन्होंने शाहपुरा में 1751 ई. में रामस्नेही सम्प्रदाय की मुख्य गद्दी स्थापित की।
- इन्होंने **भगवान राम की निर्गुण उपासना** की थी।
- अणभै वाणी (अणर्भवाणी) - इस ग्रंथ में संत रामचरण जी के उपदेश संकलित है।
- इनके संत गुलाबी वस्त्र धारण करते हैं।
- रामचरण जी के 12 प्रधान शिष्य थे।
- प्रार्थना स्थल को 'रामद्वारा' कहते हैं।

सुमेलित कीजिए-

III Grade Teacher- 28.12.2018

(A) सिंहथल शाखा	**(1) संत रामचरण**
(B) रैण शाखा	**(2) संत हरिराम दास**
(C) खेड़ापा शाखा	**(3) संत रामदास**
(D) शाहपुरा शाखा	**(4) संत दरियाव**

(a) A-1, B-3, C-2, D-4
(b) A-2, B-4, C-3, D-1
(c) A-1, B-2, C-3, D-4
(d) A-3, B-1, C-4, D-2

उत्तर:- (b)

व्याख्या-
- **सिंहथल शाखा (बीकानेर) -** संस्थापक संत हरिराम दास जी
- **रैण शाखा रैण (नागौर) -** संस्थापक संत दरियाव जी।
- **खेड़ापा शाखा (जोधपुर) -** संस्थापक संत रामदास जी।
- **शाहपुरा शाखा -** संस्थापक संत रामचरण जी ।

रामस्नेही सम्प्रदाय के संस्थापक संत रामचरण कहाँ पैदा हुए?

JEN (Civil) Diploma-08.07.2022

(a) सोड़ा - डिग्गी (b) शाहपुरा - भीलवाड़ा
(c) नगला – भरतपुर (d) मुकाम – बीकानेर

उत्तर:- (a)

व्याख्या-
- उपुर्यक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

चरणदासी सम्प्रदाय की प्रधान पीठ एवं संत चरणदास जी की समाधि कहाँ है?

JEN Exam - 21.08.2016
III Grade (SST)-26.02.2023

(a) दिल्ली (b) अलवर
(c) बीकानेर (d) सीकर

उत्तर:- (a)

व्याख्या-
- चरणदासजी का जन्म - विक्रम संवत् 1760 में (1703 ई.) भाद्रपद शुक्ल तृतीया को डेहरा गाँव (अलवर) में हुआ।

◪ **"सात वार नौ त्यौहार" यह कहावत भारत के किस राज्य से संबंधित है?**
निम्नलिखित विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर चुनें:
पशु परिचर - 2024 (2nd Shift) 02.12.2024
(a) ओडिशा (b) गुजरात
(c) राजस्थान (d) बिहार

उत्तर:- (c)

व्याख्या:-
- राजस्थान में एक कहावत प्रचलित है **'सात वार, नौ त्योहार'** अर्थात् सप्ताह के सात दिनों में यहां नौ त्यौहार होते हैं।
- यहाँ की स्थानीय संस्कृति की अभिव्यक्ति लोकोत्सवों में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है।
- राजस्थान में त्योहारों का आरम्भ छोटी तीज (श्रावण शुक्ल तृतीया) से तथा त्योहारों की समाप्ति गणगौर (चैत्र शुक्ल तृतीया) को मानी जाती है।

◪ **'आदिवासियों का कुम्भ' किस मेले को कहा जाता है?**
4th Grade - 1st Shift - 19.09.2025
II Grade GK (संस्कृत शिक्षा) 17.02.2019
REET (1-11. S-1)-24.7.2022
Lab Assistent (Science) -29.6.2022
III Grade (Hindi) -2023 H.C. LDC - 2023
EO & RO-14.05.2023 (S-II)
(a) बाणगंगा का मेला (b) पुष्कर का मला
(c) सरसुरा का मेला (d) बेणेश्वर मेला

उत्तर:- (d)

व्याख्या:-
- बेणेश्वर मेला भारत के प्रमुख आदिवासी मेलों में से एक है, जिसे आदिवासियों का कुंभ, भीलों का कुंभ, वागड़ का पुष्कर कहा जाता है।
- यह मेला **राजस्थान के डूंगरपुर जिले में स्थित नवाटापरा** नामक स्थान पर आयोजित होता है। यह स्थान धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।
- **माघ महीने के अंतिम पांच दिनों के दौरान**, बाणेश्वर धाम, जहां तीन पवित्र नदियों **(सोम, माही और झाखम)** का मिलन होता है, बड़ी संख्या में आदिवासियों को आकर्षित करता है, इसलिए इसे त्रिवेणी संगम कहा जाता है।
- आदिवासी न केवल राजस्थान से बल्कि मध्य प्रदेश और गुजरात जैसे पड़ोसी राज्यों से भी आते हैं।
- यहाँ भगवान शिव का एक अत्यंत प्रतिष्ठित मंदिर है।

◪ **बेणेश्वर का मेला लगता है-**
राज. पुलिस कॉन्स्टेबल -2025
HIGH COURT LDC - 2023
(a) माघ पूर्णिमा को (b) सावन पूर्णिमा को
(c) कार्तिक पूर्णिमा को (d) चैत्र पूर्णिमा को

उत्तर:- (a)

व्याख्या :-
- उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

◪ **कपिल मुनि का मेला लगता है-**
CET-11.2.2023 (S-II)
(a) पुष्कर (b) कोलायत
(c) गोगामेड़ी (d) मुकाम

उत्तर:- (b)

व्याख्या:-
- राजस्थान के **बीकानेर जिले के कोलायत में कार्तिक पूर्णिमा के दिन कपिल मुनि मेला** लगता है।
- माना जाता है कि कपिल मुनि ने मानव जाति के कल्याण के लिए यहां 'तपस्या' की थी।
- कपिल मुनि का मेला कोलायत में कार्तिक पूर्णिमा पर आयोजित होता है। यह बीकानेर जिले का सबसे बड़ा मेला है।
- **52 घाटों वाली एक झील है।** यहां कपिल मुनि को समर्पित एक मंदिर कपिल मुनि घाट पर स्थित है जिसमें इस महान संत की एक संगमरमर की प्रतिमा स्थापित है।

– लोग खुद को पापों और मोक्ष से मुक्त करने के लिए साल भर कोलायत झील में पवित्र डुबकी लगाने के लिए बड़ी संख्या में यहां आते हैं। हालाँकि, कार्तिक पूर्णिमा पर झील में स्नान करना बहुत शुभ माना जाता है। जांगल प्रदेश का सबसे बड़ा मेला है।

राजस्थान में 'कपिल मुनि' मेला कहाँ आयोजित होता है?

पटवार द्वितीय पारी 17 अगस्त 2025

(a) जोधपुर में मंडोर
(b) बीकानेर में कोलायत
(c) हनुमानगढ़ में कालीबंगा
(d) जयपुर में सांगानेर
(e) अनुत्तरित प्रश्न

उत्तर:- (b)

व्याख्या:-
– कार्तिक पूर्णिमा दिन राजस्थान के बीकानेर जिले के कोलायत नामक स्थान पर कोलायत मेला लगता है।

कपिल मुनि का मेला कार्तिक पूर्णिमा को राजस्थान के किस स्थान पर लगता है?

4th Grade - 1st Shift - 20.09.2025
राज. पुलिस कॉन्स्टेबल परीक्षा - 2025

(a) रामदेवरा
(b) कोलायत
(c) सालासर
(d) पुष्कर

उत्तर:- (b)

व्याख्या-
– उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

सही सुमेलित नहीं है ?

सांख्यिकी अधिकारी-25.02.2024

(a) कैला देवी मेला- करौली
(b) कपिल मुनि मेला- कोटा
(c) भर्तृहरि मेला- अलवर
(d) शीतला माता मेला- चाकसू

उत्तर:- (b)

व्याख्या:-

कैला देवी मेला- करौली
– प्रतिवर्ष नवरात्रों में (चैत्र शुक्ल अष्टमी को) कैला देवी का मेला लगता है।

कपिल मुनि मेला
– बीकानेर के कोलायत में लगने वाला कपिल मुनि का मेला बीकानेर जिले का एक बड़ा मेला माना जाता है।
– कार्तिक पूर्णिमा को लगने वाला यह मेला कपिल मुनि के सम्मान में होता है।
– कोलायत का मूल नाम भी उन्हीं के नाम पर कपिलायतन था।

शीतला माता मेला- चाकसू (चेचक की देवी)
– चैत्र कृष्ण अष्टमी के दिन राजस्थान के जयपुर जिले के चाकसू नामक स्थान पर शीतला माता का मेला लगता है। शील की डूंगरी (चाकसू) मंदिर में शीतला माता की खंडित प्रतिमा की पूजा की जाति है।
– चाकसू के शीतला माता मेले को बैलगाडी मेला भी कहते हैं।

भर्तृहरि मेला- अलवर
– भाद्रपद शुक्ल पक्ष की अष्टमी के दिन राजस्थान के अलवर जिले में भर्तृहरि मेला लगता है।

जिला, जिसमें प्रसिद्ध भर्तृहरि मेला आयोजित होता है-

द्वितीय श्रेणी अध्यापक परीक्षा - 26.04.2017
कनिष्ठ अनुदेशक (फिटर) परीक्षा - 23.03.2019
ACF & FRO -18.02.2021
पशुधन सहायक - 04.06.2022
III Grade (English) - 27.02.2023

(a) जयपुर (b) भरतपुर
(c) अलवर (d) दौसा

उत्तर:- (c)

व्याख्या:-
– राजस्थान के अलवर जिले में प्रसिद्ध **भर्तृहरि मेला** आयोजित होता है।
– यहाँ लक्खी मेला प्रतिवर्ष **भादवा शुक्ल अष्टमी** को आयोजित किया जाता है।

राजस्थान की चित्रकला

◪ **राजस्थानी चित्रकला का सबसे पहले वैज्ञानिक विभाजन किसने किया?**

VDO-28.12.2021 (Shift-1)
बेसिक कम्प्यूटर अनुदेशक - 18.06.2022

(a) पंडित द्वारका प्रसाद शर्मा
(b) आनन्द कुमार स्वामी
(c) सौभागमल गहलोत
(d) श्री रायकृष्णदास जी

उत्तर:- (b)

व्याख्या:-
- राजस्थानी चित्रकला का सबसे पहले वैज्ञानिक विभाजन **स्वर्गीय आनंद कुमार स्वामी** ने किया था।
- राजस्थान में चित्रकला के आधुनिक जनक – **कुन्दनलाल मिस्त्री**।
- **राजस्थान में चित्रशैली की शुरुआत –** 15वीं से 16वीं सदी के मध्य।
- **राजस्थान चित्रशैली की उत्पत्ति** – गुजराती/जैन/अजन्ता अपभ्रंश शैली से हुई।

◪ **'राजपूत पेंटिंग' शीर्षक से 1916 ई. में किसने पुस्तक लिखी?**

VDO-27.12.2021 (Shift-II)
JEN (Mechanical) Diploma- 20.05.2022
जेल प्रहरी - 2017

(a) रामकृष्ण दास (b) डब्ल्यू. एच. ब्राउन
(c) आनन्द कुमार स्वामी (d) एच. सी. मेहता

उत्तर:- (c)

व्याख्या:-
- **आनंद कुमार स्वामी** ने वर्ष 1916 में **'राजपूत पेंटिंग'** नामक पुस्तक लिखी।
  जादुनाथ – प्रान्तीय मुगलकला
  हेवेल, गांगुली – राजपूत चित्रकला शैली

राजस्थान चित्रशैली के प्राचीन नाम –
- **हिन्दु चित्रशैली** – एच.सी. मेहता की 'स्टडीज इन इण्डियन पेंटिंग्स' के अनुसार।
- **राजस्थानी चित्रशैली –** रायकृष्ण दास के अनुसार।
- **राजपूत कला –** डब्ल्यू.एच. ब्राउन के ग्रंथ **'इण्डियन पेंटिंग्स'** के अनुसार।
- **राजस्थान का प्रथम चित्रकार –** मरू प्रदेश का श्रृंगधर **(तिब्बत इतिहासकार तारानाथ शर्मा के अनुसार)**

◪ **निम्नलिखित में से कौन राजपूताना चित्रकला के स्कूलों और उनकी शैलियों के अनुसार सही सुमेलित नहीं है?**

VDO Mains -09.07.2022

(a) मेवाड़ स्कूल - नाथद्वारा और देवगढ़ शैलियाँ
(b) मारवाड़ स्कूल - किशनगढ़ और नागौर शैलियाँ
(c) हाड़ौती स्कूल - कोटा और बूँदी शैलियाँ
(d) ढूंढाड़ स्कूल - चावंड और उदयपुर शैलियाँ

उत्तर:- (d)

व्याख्या:-
- **मेवाड़ स्कूल** में उदयपुर चित्रशैली, नाथद्वारा चित्रशैली, देवगढ़ चित्रशैली, चावण्ड चित्रशैली है।
- **मारवाड़ स्कूल** – जोधपुर, बीकानेर, किशनगढ़, नागौर, अजमेर, जैसलमेर, शैलियाँ शैली है।
- **हाड़ौती स्कूल –** कोटा, बूँदी और झालावाड़ उपशैली है।
- **ढूंढाड़ स्कूल-** आमेर, जयपुर, शेखावाटी, उनियारा (टोंक), अलवर शैली है।

◪ **राजस्थानी चित्रकला शैली का स्वर्णिम काल कौन-सी सदी मानी जाती है?**

REET L-II (Re-Exam), 16.10.2021

(a) 15वीं सदी
(b) 16वीं सदी
(c) 17वीं सदी
(d) 18वीं सदी

उत्तर:- (c)

व्याख्या:-
- **राजस्थान में चित्रशैली की शुरुआत –** 15वीं से 16वीं सदी के मध्य।
- **राजस्थान चित्रशैली की उत्पत्ति** – गुजराती/जैन/अजन्ता अपभ्रंश शैली से हुई।
- **राजस्थानी चित्रकला शैली का स्वर्णिम काल** 17वीं सदी **सदी मानी जाती है।** इस काल में, राजस्थानी चित्रकला में विभिन्न शैलियों का विकास हुआ।

राजस्थानी चित्रकला का प्रथम चित्रित ग्रंथ
- **'दस वैकालिक सूत्र चूर्णी' एवं 'औध नियुक्ति वृत्ति** (1060 ई.)।
- ये ग्रन्थ **जिनभद्र सूरी के भूमिगत संग्रहालय जैन भण्डार, जैसलमेर** में सुरक्षित है।

◪ **चित्रकला के विकास हेतु कार्यरत' आयाम तथा कलावृत संस्थान' किस जिले में स्थित है?**

पटवारी परीक्षा 2011

(a) जोधपुर (b) अजमेर
(c) जयपुर (d) उदयपुर

उत्तर:- (c)

व्याख्या:-

चित्रकला से संबंधित प्रमुख संग्रहालय
- जैन भंडार / जिनभद्र सुरी संग्रहालय – जैसलमेर
- सरस्वती भण्डार – उदयपुर
- मान प्रकाश – जोधपुर
- पोथीखाना – जयपुर
- अगता/कोटा संग्रहालय – कोटा
- जुबली संग्रहालय – बीकानेर
- **कला, आयाम, - जयपुर**

◪ **किस शैली में चमकीले पीले रंग और लाख के लाल रंग की प्रधानता देखी जाती है?**

ARO-27.8.2022

(a) मारवाड़ (b) किशनगढ़
(c) मेवाड़ (d) हाड़ौती

उत्तर:- (a)

व्याख्या:-
- **जोधपुर चित्रकला की विशेषताएँ –**
- लाल व पीले रंग का प्रयोग,
- हाशिये में पीले रंग का चित्रण,
- बादलों का चित्रण आदि।

प्रमुख चित्र –
- ढोला-मारू
- महेन्द्र-मूमल
- बाघा-भारमल,
- अभय सिंह का नृत्य देखते हुए चित्र **डालचंद ने बनाया।**
- रागमाला (वीर जी द्वारा)
- दुर्गादास राठौड़ का चित्र **(A. H. मूलर द्वारा)**
- **राम-रावण युद्ध का चित्र**
- **सप्त सती का चित्र**
- **प्रमुख चित्रित ग्रंथ -** उत्तराध्ययन सूत्र, भागवत पुराण, नाथ चरित्र, शिव पुराण, दुर्गा पुराण।
- **राव मालदेव** के शासन काल में जोधपुर के **चोखेलाव महल** में **भित्ति चित्र** बनाये गये थे।
- **मानसिंह** के शासन काल में **नाथ सम्प्रदाय** से संबंधित चित्र अधिक बनाये गये थे।
- **महाराजा जसवन्तसिंह प्रथम** ने मारवाड़ शैली में **कृष्ण लीलाओं का चित्रण** करवाया।
- **प्रमुख चित्रकार –** डालचन्द, वीरजी, शिवदास, शंकरदास, अमरदास, जीतमल, छज्जू, घासीराम, नारायणदास आदि।

◪ **घाणेराव, रियाँ, भिनाय, जूनियाँ आदि ठिकाणा कला सम्बन्धित है-**

III Grade (Sans.) -12.02.2023 (S-II)

(a) मेवाड़ स्कूल चित्रशैली
(b) मारवाड़ स्कूल चित्रशैली
(c) हाड़ौती स्कूल चित्रशैली
(d) ढूँढ़ाड स्कूल चित्रशैली

उत्तर:- (b)

प्रसिद्ध मीनाकारी 'थेवा कला' का संबंध किस स्थान से है?

BSTC परीक्षा-2025 (प्रथम पारी)
महिला पर्यवेक्षक - 6.1.2019
वनपाल-06.11.2022 (S-1)
JEN Degree (TSP) - 16.10.2016
JEN (विद्युत) डिग्री - 29.11.2020
अन्वेषक - 27.12.2020
LDC-11.08.2024

(a) बीकानेर
(b) जयपुर
(c) बाड़मेर
(d) प्रतापगढ़

उत्तर:- (d)

व्याख्या:-
थेवा कला, प्रतापगढ़
– **थेवा कला के जनक -** नाथूजी सोनी है।
– **थेवा कला का मुख्य केन्द्र -** प्रतापगढ़ है।
– **काँच पर सोने की मीनाकारी** को थेवा कला कहा जाता है।
– इसके लिए **रंगीन बेल्जियम काँच** का प्रयोग किया जाता है।
– इस कला में **नारी श्रृंगार के आभूषण एवं अन्य उपयोगी वस्तुएँ** बनायी जाती है।
– थेवा कला विश्व में केवल **प्रतापगढ़ जिले** तक ही सीमित है।
– इस कला को जानने वाले शिल्पी "**राज सोनी परिवार**" राजस्थान के प्रतापगढ़ में ही रहते हैं।
– **जस्टिन वकी (अंग्रेज अधिकारी)** ने इस कला को **अंतर्राष्ट्रीय स्तर** पर लोकप्रिय बनाया।
– **थेवा कला पर 5 रुपये का डाक टिकट** नवम्बर, 2002 को **जारी किया गया था।**

राजस्थान का 'राज-सोनी' परिवार आभूषण निर्माण की निम्नलिखित में से किस कला से संबंधित है?

राजस्थान पुलिस-13.5.2022 (S-II)

(a) कुंदन कार्य (b) मीनाकारी
(c) पटवा (d) थेवा

उत्तर:- (d)

व्याख्या:-
– राजस्थान का **'राज-सोनी' परिवार** आभूषण निर्माण की **थेवा कला से संबंधित** है।
– **थेवा कला के प्रमुख कलाकार** – जगदीश सोनी, महेश राज सोनी, शंकल लाल सोनी, रामप्रसाद सोनी, बेनीराम सोनी, रामविलास सोनी है।

राजस्थान की...... कला सोने का उपयोग कर काँच पर एक सूक्ष्म चित्रकारी (मिनट पेंटिंग) है।

PTET - 2023

(a) देवरा
(b) थेवा
(c) फड
(d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर:- (b)

व्याख्या:-
– उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

राजस्थान में 'ब्लू पॉटरी' का प्रमुख केन्द्र कौन-सा है?

कनिष्ठ वैज्ञानिक सहायक (रसायन) 14.9.2019
राजस्थान पुलिस कॉन्स्टेबल-13.05.2022 (I)

(a) बीकानेर
(b) डूंगरपुर
(c) जयपुर
(d) जैसलमेर

उत्तर:- (c)

व्याख्या:-

ब्लू पॉटरी-

- राजस्थान में **'ब्लू पॉटरी' का प्रमुख केन्द्र जयपुर** है।
- सवाई रामसिंह द्वितीय के समय यह कला जयपुर में प्रारम्भ हुई।
- जयपुर के **चूड़ामन और कालू कुम्हार** ने दिल्ली के भोला नामक कलाकार से यह कला सीखी और राजस्थान में इसे स्थापित किया।
- पद्मश्री से सम्मानित **कृपालसिंह शेखावत** ने इस कला को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई।
- सन् 1974 में कृपालसिंह शेखावत को ब्लू पॉटरी के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए पद्म श्री से सम्मानित किया गया।
- **स्वर्गीय नाथी बाई** इस कला क्षेत्र की प्रसिद्ध महिला कलाकार थी।
- ब्लू पॉटरी के बर्तनों पर हरा काँच, कथीरा, सागी, क्वार्ट्ज पाउडर और मुल्तानी मिट्टी का मिश्रण चढ़ाया जाता है।
  इन बर्तनों पर फूल-पत्तियाँ, देवी-देवताओं और अन्य दृश्य चित्रित किए जाते हैं।
- तैयार पॉटरी को **800° सेंटीग्रेड तापमान** में पकाया जाता है।
- **वर्तमान में प्रमुख कलाकार-** त्रिलोकचन्द, दुर्गालाल, गिरिराज, हनुमान सहाय, भगवान सहाय और भैंरू खारवाड़, गोपाल सैनी, मीनाक्षी राठौड़।

निम्नलिखित में से, किसने राजस्थान से 'ब्लू पॉटरी' (नील-मृद्भांड) पर, अपनी चित्रकला के लिए, अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की?

4th Grade - 1st Shift - 19.09.2025

(a) बीरबल सिंह (b) दयालदास
(c) कृपाल सिंह शेखावत (d) कोमल कोठारी
(e) अनुत्तरित प्रश्न

उत्तर:- (c)

व्याख्या:-
- उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

निम्न में से जयपुर का परम्परागत हस्त उद्योग कौन-सा है?

CET-11.2.2023 (S-II)

(a) ऊनी खादी (b) थेवा कला
(c) चित्रकला (d) ब्लू पॉटरी

उत्तर:- (d)

व्याख्या:-
- जयपुर का **परम्परागत हस्त उद्योग ब्लू पॉटरी** है।
- ब्लू पॉटरी एक **पारंपरिक हस्तकला** है**,** इसमें सफ़ेद चमकीले बर्तनों पर नीले रंग से जटिल विवरण चित्रित किए जाते हैं।
- यह कला **मूल रूप से चीन और फारस** की है, जो मुग़लकाल में भारत आई और **जयपुर** में इसका प्रचार हुआ।
- ब्लू पॉटरी का जन्म पर्शिया (ईरान) मे माना जाता है।
- पूर्व में इसे कामचीनी के नाम से जाना जाता था।

ब्लू पॉटरी को राजस्थान में किस शासक द्वारा लाया गया?

III Grade (Punjabi) - 28.02.2023
कर सहायक - 14.10.2018
Veterinary Officer - 02.08.2020
P.S.I. Exam, 2011, CET: 8.1.2023 (S-II)
जेल प्रहरी परीक्षा 20-10-2018 (S-I)

(a) रामसिंह (b) मानसिंह
(c) माधोसिंह (d) भवानीसिंह

उत्तर:- (a)

व्याख्या:-
- राजस्थान में ब्लू पॉटरी के निर्माण की **शुरुआत जयपुर में सवाई रामसिंह-द्वितीय (1835-1880 ई.)** के शासनकाल में हुई।

राजा मानसिंह आमेर में मीनाकारी की कला को प्रारम्भ करने के लिए पाँच कारीगर किस स्थान में लाया?

क. वैज्ञानिक सहायक- 22.9.2019

(a) दिल्ली (b) बुरहानपुर
(b) वाराणसी (d) लाहौर

उत्तर:- (d)

लोक नृत्य एवं नाट्य

◪ **राजस्थान राज्य की 'आत्मा' (लोक नृत्यों का सिरमौर/राज्य नृत्य) किस नृत्य को कहा जाता है?**
राजस्थान पुलिस कॉन्स्टेबल-14.06.2024 (I)
जेल प्रहरी-2017

(a) घूमर (b) इंडोली
(c) तेरहताली (d) भवाई

उत्तर:- (a)

व्याख्या:-
घूमर नृत्य
- घूमर, **राजस्थान का राज्य नृत्य** है।
- यह **विशुद्ध स्त्री** नृत्य है।
- घूमर को राजस्थान में **'नृत्यों का सिरमौर', 'राजस्थान के नृत्यों की आत्मा', रजवाडी नृत्य** कहा जाता है।
- केवल महिलाओं के द्वारा तीज, गणगौर तथा अन्य शुभ अवसरों पर घूमर नृत्य किया जाता है।
- गोल घेरे में महिलाएँ अपनी ही धुरी पर घुमती हुई नृत्य करती है।
- इस नृत्य में विशिष्ट प्रकार का घाघरा पहना जाता है। यह घाघरा कई कलियों का (**80** कलियों तक) होता है। इसकी हर कली घेर लिए होती है।
- घूमर नृत्य में हाथों का लचकदार संचालन होता है।
- घूमर नृत्य में **8 चरण होते हैं**, जिन्हें **सवाई** कहा जाता है।
- वाद्य यंत्र- घूमर नृत्य करते समय **ढोल, नगाड़ा और शहनाई, ढोल व मंजीरा** वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जाता है।
- **इस गीत के बोल -**
- "म्हारी घूमर छै नखराली ऐ माय।
घूमर रमवा म्है जास्यां ओ रजरी" ।।
- यह सामन्तशाही नृत्य है।
- **1986 में गणगौर घूमर एकादमी की स्थापना** संतरामपुर में की गई। मुख्यालय अजमेर को बनाया गया।
- यह **नृत्य सर्वप्रथम भील जनजाति द्वारा माता सरस्वती की आराधना में प्रारम्भ किया** गया है।
- इसकी उत्पत्ति मध्य एशिया के भृंग नृत्य से मानी गई है।

◪ **राजस्थान के एक पारंपरिक नृत्य का नाम क्या है, जो अधिकतर महिलाओं द्वारा लहरदार लंबे घाघरे और रंगीन दुपट्टे पहनकर किया जाता है, नृत्य में एक सम्मोहक लय होती है जो चरमस्थिति में पहुँचने तक गति पकड़ती जाती है?**
राजस्थान पुलिस कॉन्स्टेबल-16.05.2022 (II)

(a) मयूर नृत्य (b) गैर
(c) घूमर (d) बम

उत्तर:- (c)

व्याख्या:-
- राजस्थान के एक **पारंपरिक नृत्य घूमर** है।
- घूमर नृत्य में हाथों का लचकदार संचालन होता है।

◪ **घूमर लोक नृत्य को संरक्षित करने और बढ़ावा देने के लिए... में राजस्थान में 'गणगौर घूमर नृत्य अकादमी' स्थापित की गई?**
राज. पुलिस कॉन्स्टेबल-07.11.2020 (II)

(a) 1981 में (b) 1986 में
(c) 1968 में (d) 1976 में

उत्तर:- (b)

व्याख्या:-
- **घूमर लोक नृत्य** को संरक्षित करने और बढ़ावा देने के लिए **1986 में** राजस्थान में **'गणगौर घूमर नृत्य अकादमी'** स्थापित की गई।

◪ **राजस्थान राज्य का आधिकारिक नृत्य है-**
III Grade (L-1) -25.2.2023

(a) घूमर (b) भवई
(c) कठपुतली (d) गैर

उत्तर:- (a)

व्याख्या:-
- घूमर, **राजस्थान का राज्य नृत्य** है।
- यह विशुद्ध स्त्री नृत्य है।

भारत के सबसे लोकप्रिय लोक नृत्यों में शामिल घूमर किस जनजाति द्वारा प्रांरभ किया गया था?

राजस्थान पुलिस-13.5.2022 (S-II)

(a) मीणा (b) सहरिया
(c) भील (d) गरासिया

उत्तर:- (c)

व्याख्या:-
- घूमर भारत के सबसे लोकप्रिय लोक नृत्यों में से एक है, जिसकी शुरुआत **भील जनजाति** ने की थी।
- यह नृत्य समय के साथ राजस्थान के विभिन्न राजस्थानी समुदायों द्वारा भी अपनाया गया।
- घूमर विशेष रूप से राजपूत राजाओं के शासनकाल के दौरान राजस्थान में लोकप्रिय हुआ।
- अब यह सांस्कृतिक अवसरों और सामाजिक सभाओं में महिलाओं द्वारा किया जाने वाला एक प्रमुख नृत्य बन चुका है।
- इस नृत्य की सबसे बड़ी विशेषता इसकी घूर्णन गति (घूमना) और पारंपरिक पोशाकों की भव्यता होती है, जो इसकी सुंदरता में चार चाँद लगाती है।

मेवाड़ में भीलों द्वारा किस नृत्य का प्रदर्शन किया जाता है?
निम्नलिखित विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर चुनें:

पशु परिचर - 2024 (2nd Shift) 01.12.2024
व्याख्याता भर्ती (ग्रुप-B)-17.10.2022

(a) गवरी नृत्य
(b) कालबेलिया नृत्य
(c) भवाई नृत्य
(d) घूमर नृत्य

उत्तर:- (a)

व्याख्या:-
गवरी/राई नृत्य
- **उदयपुर संभाग** के भीलों का धार्मिक नृत्य, जो भाद्रपद माह से आश्विन शुक्ल एकादशी तक नृत्य-नाटिका के रूप में मंचित किया जाता है।
- इसके साथ **शिव और भस्मासुर की पौराणिक कथा** का संबद्ध है।
- **गवरी की घाई -** गवरी लोक नृत्य-नाटिका में विभिन्न प्रसंगों को एक प्रमुख प्रसंग से जोड़ने वाले सामूहिक नृत्य को गवरी की घाई (गम्मत) कहते हैं।

गवरी नृत्य का संबंध किस जनजाति से है?

द्वितीय श्रेणी शिक्षक भर्ती 2022-(ग्रुप B)

(a) कालबेलिया (b) भील
(c) बनजारा (d) गरासिया

उत्तर:- (b)

व्याख्या:-
गवरी
- गवरी **राजस्थान का सबसे प्राचीन लोकनाट्य** है।
- **उपनाम -** लोक नाट्यों का मेरू नाट्य, **लोक नाट्यों की आत्मा/राई नृत्य**
- यह एक **धार्मिक लोकनाट्य** है जो भीलों की आराध्य देवी गवरी (गौरी) को समर्पित है।
- यह लोकनाट्य भीलों द्वारा भाद्रपद माह के प्रारम्भ से आश्विन शुक्ला एकादशी तक गवरी उत्सव में किया जाता है।
- राखी (रक्षाबन्धन) के अगले दिन से इसका प्रदर्शन 40 दिन तक चलता है।
- गवरी लोकनाट्य का मुख्य आधार शिव तथा भस्मासुर की कथा है।
- भगवान शिव इस नाट्य के प्रमुख पात्र होते है।
- इस नृत्य नाट्य में शिव को **'पुरिया'** कहा जाता है।
- इसमें केवल भील पुरुष ही भाग लेते हैं तथा स्त्री पात्र की भूमिका भी पुरुष ही निभाते हैं।
- **मुख्य प्रसंग -** देवी अम्बड, बादशाह की सवारी, बंजारा, शेर-सूअर की लड़ाई, भिन्यावड तथा खाडलिया भूत, कालूगीर, गोमा मीणा आदि।
- **"कुटकुड़ियां'** इस नाट्य का सूत्रधार होता है।
- "झामट्या' लोक भाषा में कविता बोलता है तथा "खट्कड़िया' उसे दोहराते है।
- इस नाट्य के अन्य पात्र 'खेल्ये' (खेला) कहलाते है।
- **मुख्य पात्र -** इस लोकनाट्य के पाँच मुख्य पात्र होते हैं- **राई बुढ़िया,** दोनों राइयाँ (मोहिनी तथा असली पर्वती), पाट भोपा तथा कुटकुड़िया।
- **गळावन-बळावन** की रस्म से गवरी की विदाई होती है।

लोक गीत एवं संगीत

◪ **पटेल्या, बीछियों एवं लालर क्या हैं?**

BSTC परीक्षा - 2025 (द्वितीय पारी)
वनरक्षक - 12.12.2022 (S-I)
CET 12th Level - 2024 (1st Shift)
STENOPGRAPHER Exam 06.11.2024

(a) राजस्थानी आभूषण
(b) राजस्थानी लोक गीत
(c) राजस्थानी लोक वाद्य
(d) राजस्थानी लोक नाट्य

उत्तर:- (b)

व्याख्या:-
- पटेल्या, बीछियों, लालर, माछर, नोखिला, नाव री असवारी मेवाड़ के प्रसिद्ध गीत है।
- मूमल, झोरावा, घुड़ला और जीरो आदि मारवाड़ के कुछ प्रसिद्ध गीत हैं।
- राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत में **लोकगीतों** का विशेष स्थान है।
- ये गीत जनमानस की भावनाओं, परंपराओं, आस्था और सामाजिक जीवन के अभिन्न अंग हैं।
- इन्हें आमतौर पर विभिन्न **सामूहिक अवसरों** पर गाया जाता है, जैसे त्यौहार, विवाह, धार्मिक अनुष्ठान, और कृषि से जुड़ी गतिविधियाँ।

◪ **घूघरी, केवड़ा आदि लोकगीत किस क्षेत्र से सम्बन्धित है?**

Librarian Garde-II Exam - 02.08.2020

(a) पर्वतीय क्षेत्र (b) मैदानी क्षेत्र
(c) मरुस्थलीय क्षेत्र (d) मेवात क्षेत्र

उत्तर:- (c)

व्याख्या:-
- राजस्थान की सांस्कृतिक विविधता का एक महत्वपूर्ण भाग उसके लोकगीत हैं, जो राज्य के अलग-अलग क्षेत्रों की भौगोलिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान को दर्शाते हैं।
- इन लोकगीतों को उनके क्षेत्रीय स्वरूप के आधार पर मुख्यतः रेगिस्तानी क्षेत्रीय गीत, मैदानी क्षेत्र के गीत और पर्वतीय क्षेत्र के गीत भागों में विभाजित किया गया है।

रेगिस्तानी क्षेत्रीय गीत
- राजस्थान के पश्चिमी मरुस्थलीय जिलों जैसे बाड़मेर, बीकानेर, जैसलमेर और जोधपुर में गाए जाते हैं।
- यहां के लोग संगीत और लोकगीतों के माध्यम से मनोरंजन प्राप्त करते हैं और अपनी भावनाएं प्रकट करते हैं।
- इन गीतों में प्रेम, विरह और कल्पना की प्रधानता होती है। **मूमल, केवड़ा, घुघरी, रतनराणो कुरजां एवं पीपली** जैसे गीत इस श्रेणी के प्रमुख उदाहरण हैं।

मैदानी क्षेत्र के लोकगीत
- मुख्यतः राजस्थान के पूर्वी और उत्तर-पूर्वी जिलों जैसे जयपुर, अलवर, भरतपुर और धौलपुर में प्रचलित हैं।
- इन गीतों में भक्ति रस की प्रधानता है।
- यहाँ के **गीतों में भाषा और स्वर-रचना की विविधता** मिलती है।

पर्वतीय क्षेत्र के लोकगीत-
- सिरोही, उदयपुर, डूंगरपुर और बांसवाड़ा जैसे दक्षिणी-पश्चिमी जिलों में गाए जाते हैं।
- इन क्षेत्रों में मुख्यतः जनजातीय समुदाय जैसे भील, मीणा और गरासिया निवास करते हैं।
- इनके गीतों में प्राकृतिक जीवन, सामाजिक परंपराएं और जनजातीय संस्कृति झलकती है।
- पटेल्यों बीछियों लालर, माछर, शिकार, हमसीढो। जैसे गीत पर्वतीय क्षेत्र की पहचान हैं।

◪ **निम्नलिखित में से कौन संगीत के जयपुर घराने से सम्बन्धित है?**

Agriculture Supervisor 04.02.2024

(a) भीमसेन जोशी (b) जसराज
(c) गिरजा देवी (d) मलिकार्जुन मंसूर

उत्तर:- (d)

व्याख्या:-

जयपुर घराना

- प्रवर्तक- मनरंग (भूपत खाँ)।
- मनरंग, जो दिल्ली घराने के प्रवर्तक सदारंग के पुत्र थे, इस घराने के संस्थापक माने जाते हैं।
- प्रसिद्ध संगीतज्ञ- मुहम्मद अली खाँ कोठी वाले, केसर बाई केरगर, मोगूबाई, कुडीकर, मंजी खाँ, भूजी खाँ आदि।
- मल्लिकार्जुन मंसूर शास्त्रीय संगीत में जयपुर - अतरौली घराने के ख्याल शैली के गायक थे।

जयपुर घराने का प्रसिद्ध नृत्य कौन-सा है?

CET-4.2.2023 (S-2)

(a) ओडिसी (b) भरतनाट्यम
(c) कत्थक (d) कथकली

उत्तर:- (c)

व्याख्या:-

- जयपुर घराना भारतीय **शास्त्रीय नृत्य कत्थक** की एक प्रमुख शैली के रूप में जाना जाता है।
- इस घराने की **नींव भानुजी** द्वारा रखी गई मानी जाती है।
- जयपुर घराने की कत्थक शैली की अनेक विशिष्टताएँ हैं, जो इसे अन्य घरानों से अलग करती हैं।
- इस शैली की प्रस्तुति गणेश वंदना अथवा किसी देवता की स्तुति से होती है, जो इसकी हिंदू धार्मिक जड़ों को दर्शाता है।
- नृत्य की शुरुआत में किया जाने वाला थाट वह प्रक्रिया है जिसमें नर्तक बिना पैर उठाए मंच पर एक ओर से दूसरी ओर सरकता है। इसके बाद आमद होती है, जिसमें नर्तक मंच पर नृत्य करते हुए प्रवेश करता है।
- इस घराने की विशेषता नर्तक की पैरों में बोलों की शुद्ध निकासी और क्लिष्ट पद संचालन में निपुणता है।
- जयपुर घराने की शैली में कविता के शब्दों, नृत्य के बोलों, और तबला व पखावज जैसे वाद्य यंत्रों का समन्वय एक आकर्षक नृत्य प्रस्तुति में होता है।

राजस्थान में एकमात्र शास्त्रीय नृत्य कत्थक के जयपुर घराने के प्रवर्तक माने जाते हैं?

Asstt. Agr. Off. 31.5.19

(a) लच्छन महाराज (b) भानुजी महाराज
(c) बिरजू महाराज (d) उदयशंकर जी

उत्तर:- (b)

व्याख्या:-

जयपुर का कथक घराना

- प्रवर्तक- भानूजी
- कथक नृत्य का उद्भव 13वीं सदी में राजस्थान में हुआ था।
- जयपुर घराना कथक नृत्य की हिंदू शैली का प्रमुख प्रतिनिधि है और यहीं से यह शैली पूरे भारत में फैल गई।

'झोरावा' लोक गीत का सम्बन्ध कहाँ से है?

JEN (Civil) Degree - 18.05.2022

(a) उदयपुर (b) जैसलमेर
(c) बीकानेर (d) बाड़मेर

उत्तर:- (b)

व्याख्या:-

झोरावा

- जैसलमेर जिले में पति के परदेस जाने पर उसके वियोग में गाए जाने वाले गीत।

पीपली

- यह रेगिस्तानी **इलाकों विशेषत: शेखावाटी, बीकानेर तथा मारवाड़ के कुछ भागों** में स्त्रियों द्वारा वर्षा ऋतु में गाया जाने वाला लोकगीत है।
- यह गीत एक विरहणी के प्रेमोद्गारों को अभिव्यक्त करता है, जिसमें प्रेयसी अपनी परदेसी पति को बुलाती है।

कुरजाँ

- विरहनी द्वारा कुरजाँ पक्षी के माध्यम से अपने प्रियतम को गीत के द्वारा संदेश भेजती हुई अपने विरह का इजहार करती है।
- **बादली –** शेखावटी प्रदेश में बारिश नहीं होने पर गया जाता है।
- **बिछुड़ो –** हाडौती का विरह गीत।
- **मलजी –** सिरोही का विरह गीत।
- **हिचकी –** मेवात का विरह गीत।
- **कलाली –** रजवाड़ी गीत।
- **शिकारी –** रजवाड़ी गीत।

लोक वाद्य यंत्र

◪ **कौन-सा सुषिर वाद्य है?**

JEN (Agri.) 10.09.2022

(a) अलगोजा (b) कामायचा
(c) तदूरा (d) रावणहत्था

उत्तर:- (a)

व्याख्या:-
- अलगोजा **सुषिर वाद्ययंत्र** है।
- यह वाद्ययंत्र वादक द्वारा मुँह से फूंक मारकर बजाये जाते हैं।
- यह बाँस की नली का बना हुआ वाद्ययंत्र है।
- नली को छीलकर उस पर लकड़ी का एक गट्टा चिपका दिया जाता है जिससे आसानी से आवाज निकलती है।
- यह राजस्थान का राज्य वाद्ययंत्र है।
- यह युग्म-साज है, प्रायः दो अलगोजे एक साथ मुँह में रखकर बजाये जाते हैं।
- एक से सा, दूसरे से भिन्न स्वर निकलते है।
- यह आदिवासी भील, कालबेलियाँ आदि जातियों का प्रिय वाद्ययंत्र है।
- **कलाकार –** रामनाथ चौधरी (पद्मपुरा, जयपुर)

◪ **निम्नलिखित में से कौन-सा/से सुषिर वाद्य यंत्र है/हैं?**

2nd Grade GK – 2025

(A) अलगोजा **(B) बांकिया**
(C) सतारा

नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिए -

कूट -

(a) केवल (A) (b) (A) और (B)
(c) (A), (B) और (C) (d) केवल (B)
(e) अनुत्तरित प्रश्न

उत्तर:- (c)

व्याख्या-
- उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

◪ **निम्नलिखित में से कौनसा सुषिर वाद्ययंत्र नहीं है?**

2nd Grade 2024 1st Paper – GK

(a) सतारा (b) नड़
(c) मशक (d) भपंग

उत्तर:- (d)

व्याख्या:-
- जिन वाद्य यन्त्रों में तार लगे होते हैं उन्हें **तत् वाद्ययंत्र** कहा जाता है।
- भपंग तत् वाद्ययंत्र है।

◪ **निम्नलिखित में से कौन सा सुषिर वाद्य नहीं है?**

RAS-2013

(i) सुरनाई **(ii) अलगोजा**
(iii) नागफणी **(iv) कमायचा**

सही विकल्प चुनिए :

(a) (ii), (iii) व (iv) (b) (i) व (iii)
(c) (iii) व (iv) (d) केवल (iv)

उत्तर:- (d)

व्याख्या:-

सुरनाई, अलगोजा, नागफणी सुषिर वाद्य यंत्र है।

सुरनई
- इसकी नलिका शंकु के आकार की होती है।
- राजस्थान के लोक वाद्यों में कई रूपों में प्रचलित वाद्ययंत्र 'सुरनई', शहनाई से मिलता-जुलता दो रीड का वाद्ययंत्र है।
- इसके ऊपरी भाग में 6 छिद्र होते हैं और इसे शहनाई की तरह बजाया जाता है।
- मुख्य रूप से इसे जोगी, भील, ढोली तथा जैसलमेर क्षेत्र के लंगा लोग बजाते हैं।
- इस वाद्ययंत्र को विवाहादि प्रायः मांगलिक अवसरों पर नगाड़े व कमायचे की संगत में बजाया जाता है।
- इसे **लक्का**, **नफीरी** व **टोटो** नाम से भी इंगित किया जाता है।

- **कलाकार – पेपे खां**

नागफणी

- पीतल की सर्पाकार नली जिसके पिछले हिस्से में छेद होते है।
- सर्पाकार पीतल का सुषिर वाद्ययंत्र, जो साधु-संन्यासियों का धार्मिक वाद्ययंत्र है।

कमायचा

- कमायचा एक तत वाद्य यंत्र है। यह राजस्थान का एक सामुदायिक वाद्य यंत्र है।
- इसे पश्चिमी राजस्थान के मंगनियार समुदाय के लोग अपने गीतों की संगत के लिए बजाते हैं।
- इसमें कुल 27 तारें होती हैं, जिनमें से दो तारें बकरे की आंत से बनाई जाती हैं।

◪ **बाँकिया, सिंगी और टोटा लोकवाद्य किस परम्परा से सम्बद्ध है-**

Librarian Garde-II Exam - 02.08.2020

(a) तत् वाद्य (b) अवनद्ध वाद्य
(c) घन वाद्य (d) सुषिर वाद्य

उत्तर:- (d)

व्याख्या:-

- **बाँकिया, सिंगी और टोटा लोकवाद्य** सुषिर वाद्य **से सम्बद्ध है।**

बांकिया

- पीतल का वक्राकार मोटे फाबे वाला सुषिर वाद्ययंत्र, जो होंठों से सटाकर फूँक द्वारा वादित होता है।
- दो या तीन स्वरों तक उपयोग संभव।
- राजस्थान में बहुप्रचलित वाद्ययंत्र जो सरगरा जाति द्वारा वैवाहिक एवं मांगलिक अवसर पर बजाया जाता है।

सींगा / सींगी

- सींगा अथवा सींगी एक पारंपरिक सुषिर वाद्य है।
- इसे मुख्य रूप से साधु-संन्यासी और लोक कलाकार उपयोग में लाते हैं।
- यह वाद्ययंत्र अक्सर **धनुषाकार आकृति** का होता है और इसका **निर्माण आमतौर पर पीतल की नली से किया** जाता है।
- इतिहास में युद्ध के समय सेनाओं को सजग करने, शौर्य प्रदर्शन और वातावरण को ऊर्जावान बनाने के लिए इस वाद्ययंत्र का प्रयोग किया जाता था, इसीलिए इसे रणसिंगा भी कहा जाता है।
- प्राचीन समय में सींगा का निर्माण जानवरों के असली सींगों से भी किया जाता था, जिससे इसका नाम "सींगा" पड़ा।

टोटो

- **टोटो** एक पारंपरिक **लोक वाद्ययंत्र** है, जिसे **शहनाई का देशी या ग्रामीण संस्करण** माना जाता है।
- इस वाद्य को प्रमुख रूप से **जोगी**, **भील** और **ढोली** समुदाय के लोग बजाते हैं।

◪ **शहनाई वाद्ययंत्रों के किस परिवार से संबंधित है? निम्नलिखित विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर चुनें:**

पशु परिचर – 2024 (1st Shift) 03.12.2024

(a) सुषिर
(b) ढोल
(c) बीट
(d) बैरल

उत्तर:- (a)

व्याख्या:-

- ये वाद्ययंत्र वादक द्वारा मुँह से फूंक मारकर बजाये जाते हैं।

प्रमुख सुषिर वाद्ययंत्र –

शहनाई

- शहनाई एक प्रमुख सुषिर वाद्ययंत्र है, जिसे पारंपरिक भारतीय संगीत में अत्यंत आदर और शुभता के प्रतीक के रूप में देखा जाता है।
- इसे कुछ क्षेत्रों में सुन्दरी या नफीरी के नाम से भी जाना जाता है।
- इसका निर्माण आमतौर पर **शीशम, सागवान या टाली की लकड़ी से** किया जाता है।
- शहनाई का प्रयोग मुख्यतः विवाह, पूजा, त्योहारों और अन्य मांगलिक अवसरों पर किया जाता है। यह वाद्य परंपरागत रूप से नगाड़े के साथ बजाया जाता है, जिससे इसका संगीत और भी प्रभावशाली बन जाता है।

आभूषण, वेशभूषा एवं खानपान

◪ राजस्थान में पोमचा एक प्रकार की ओढ़नी पहनी जाती है-

Veterinary Officer - 02.08.2020
CET-5.2.2023 (S-II)

(a) माँ बनने के उत्सव पर
(b) विवाह के अवसर पर
(c) अविवाहित कन्या द्वारा
(d) एक विधवा द्वारा

उत्तर:- (a)

व्याख्या:-

ओढ़नी

- स्त्रियां सिर, चेहरे एवं ऊपरी शरीर को ढकने के लिए ओढ़नी का प्रयोग करती है।
- **पोमचा, लहरिया, मोठड़ा एवं लूगड़ा** आदि ओढ़नियों के विभिन्न प्रकार हैं।

पीला पोमचा

- यह एक प्रकार की ओढ़नी है जो नवजात शिशु की माँ के लिए उसके मातृपक्ष की ओर से आता है।
- लड़की के जन्म पर **शिशु की माँ गुलाबी पोमचा** ओढ़ती है।
- लड़के के जन्म पर **शिशु की माँ पीला पोमचा** ओढ़ती है।

लूगड़ा/अंगोछा साड़ी

- विवाहित स्त्रियों का पहनावा जिसमें सफेद आधार पर लाल बूटे छपे हुए होते हैं।

अतिरिक्त जानकारी

- चीड़ का पोमचा हाड़ौती प्रदेश में विधवा की काले रंग की ओढ़नी होती है।
- मोतीचूर का पीला - नागौर

◪ 'पोमचा' (स्त्री परिधान) को बोलचाल की भाषा में कहा जाता है-

पशुधन सहायक- 21.10.2018
योगा एवं प्राकृतिक चिकित्सा अधिकारी 10.3.2021
House Keeper -9.7.2022
पशु परिचर - 2024 (2nd Shift) 03.12.2024

(a) पीला (b) कँवर जोड़
(c) फेटिया (d) कटकी

उत्तर:- (a)

व्याख्या:-

- 'पोमचा' (स्त्री परिधान) को बोलचाल की भाषा में **पीला** कहा जाता है।
- लड़के के जन्म पर शिशु की माँ **पीला पोमचा** ओढ़ती है।

कटकी

- आदिवासियों में बालिका की ओढ़नी।
- इसे **अविवाहित लड़कियों द्वारा सिर पर ओढ़ा** जाता है।
- इसमें अलंकरण को **पावली** एवं ओढ़नी को **पावली भाँत की ओढ़नी** कहते हैं।

कंवरजोड़

- कंवरजोड़ उस चुनरी को कहा जाता है जो मामा द्वारा अपनी भांजी (के विवाह के अवसर पर उसे भेंट की जाती है।
- वहीं, जब मामा अपनी बहन के लिए विवाह के अवसर पर चुनरी लाता है, तो उसे “बाला चुनरी” कहा जाता है।

◪ मध्यकाल और उसके बाद के समय में, राजस्थान में, निम्नलिखित में से कौन-सी पगड़ी की शैली नहीं थी?

4th Grade - 1st Shift - 19.09.2025

(a) खंजर शाही (b) शिवशाही
(c) पोमचा (d) अमरशाही
(e) अनुत्तरित प्रश्न

उत्तर:- (c)

व्याख्या:-
– उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

मारवाड़ में 'दामणी' क्या था?

पटवारी Pre-2016
वनरक्षक-13.12.2022 (S-1)
पटवार-23.10.2021 (Shift -II)

(a) ओढ़णी का एक प्रकार
(b) कलात्मक जूतियाँ
(c) एक राजस्व कर
(d) सिंचाई करने का औजार

उत्तर:- (a)

व्याख्या:-
दामड़ी / दामणी
– मारवाड़ की स्त्रियाँ लाल रंग की धागों की कसीदाकारी की हुई ओढ़नी पहनती है, जिसे **दामणी** कहा जाता है।

ओढ़नी अन्य प्रमुख प्रकार
केरी भांत की ओढ़नी
– छोटे व कच्चे आम को **केरी** कहते हैं।
– इस ओढ़नी के किनारों एवं पल्लू पर केरी छपी होती है।
– यह आदिवासियों में प्रचलित है।
– इस ओढ़नी के मुख्य भाग पर छोटी- छोटी बिंदियां बनी होती है।

ज्वार भांत की ओढ़नी
– इस ओढ़नी के दोनों ओर लाल रंग की छोटी- बूटे छपे होते हैं।
– यह आदिवासियों में प्रचलित है।

तारा भांत की ओढ़नी
– यह लाल रंग की ओढ़नी है जिसकी जमीन भूरे रंग की होती है। (पृष्ठभूमि)
– इसके किनारे पर छोर तारों जैसा षट्कोणीय आकृति में दिखाई देता है।
– यह आदिवासी महिलाओं सबसे प्रिय ओढनी मानी जाती है।

'झिम्मी' क्या है?

Asstt. Agriculture Officer - 31.05.2019

(a) पुत्र-जन्म के पश्चात चौदहवें दिन होने वाली रस्म
(b) पर्यूषण-पर्व के दौरान तीन दिन का उपवास
(c) फेरे अथवा सप्तपदी के समय मामा द्वारा दी गई और वधू द्वारा पहनी गई गोटे-किनारी युक्त लाल-गुलाबी ओढणी
(d) सन्तान प्राप्ति के बाद बेटी को विधि-विधान से ससुराल विदा करने की प्रक्रिया

उत्तर:- (c)

व्याख्या:-
– **'झिम्मी' -** फेरे अथवा सप्तपदी के समय मामा द्वारा दी गई और वधू द्वारा पहनी गई गोटे-किनारी युक्त लाल-गुलाबी ओढणी।

राजस्थान की महिलाएँ किस अवसर पर "लहरिया भाँत की ओढ़नी" पहनती हैं? निम्नलिखित विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर चुनें:

पशु परिचर - 2024 (2nd Shift) 01.12.2024

(a) होली (b) तीज
(c) दीवाली (d) शिशु के जन्म

उत्तर:- (b)

व्याख्या:-
– **लहरिया -** लहरिया श्रावण मास में तीज पर विशेष रूप से पहना जाता है।
– होली के अवसर पर फागणिया लहरिया पहना जाता है।
– लाल रंग की ओढ़नी जिस पर धागों से कसीदाकारी होती है, दामणी कहलाती है।
– पचरंगा लहरिया – जयपुर
– सतरंगा लहरिया – सुजानगढ़
– समुद्र, प्रतापशाही, राजाशाही लहरिया – जयपुर

निम्नलिखित में से किस अवसर पर राजस्थानी महिलाएँ विशेष रूप से 'लहरिया भाँत की ओदनी' पहनती हैं?

पटवार द्वितीय पारी 17.08.2025

(a) होली (b) तीज
(c) अक्षय तृतीया (d) बच्चे का जन्म

उत्तर:- (b)

कर्नल टॉड के अनुसार मीणाओं का मूल निवास स्थान निम्न में से कौन-सा था?

CET: 08.01.2023 (S-I)

(a) आबू पर्वतमाला
(b) काली खोह पर्वतमाला
(c) मुकुन्दरा पर्वत श्रेणी
(d) काली घाटी पर्वतमाला

उत्तर:- (b)

व्याख्या:-
- कर्नल टॉड के अनुसार - काली खोह पर्वतमाला अजमेर से आगरा तक फैली हुई है और इसे मीणा जाति का मूल निवास स्थान माना जाता है।

राजस्थान की मीणा जनजाति –
- यह मुख्य रूप से जयपुर, अलवर, दौसा, सवाईमाधोपुर, करौली और उदयपुर जिले में रहती है।
- मीणा जनजाति के आचार्य आचार्य मगनसागर मुनि थे।
- मीणा जाति के "मीणा पुराण" की रचना आचार्य मगन सागर मुनि ने की है।

राजस्थान में सर्वाधिक प्रतिशत वाली अनुसूचित जनजाति है-

II Grade (Social Study) 2011
R.A.S. Pre Exam, 2003

(a) भील
(b) मीणा
(c) गरसिया
(d) भील मीणा

उत्तर:- (b)

व्याख्या:-
- राजस्थान में सर्वाधिक प्रतिशत वाली अनुसूचित जनजाति मीणा है।
- राजस्थान की जनजातियों में सर्वाधिक संख्या क्रमशः मीणा, भील, गरासिया जनजाति की है।

राजस्थान में जनजातियों में संख्या की दृष्टि से दूसरे नम्बर पर है-

Agriculture Officer: 29.01.2013

(a) गरासिया (b) सहरिया
(c) भील (d) कंजर

उत्तर:- (c)

व्याख्या:-
- उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

मस्त्य पुराण में किस जनजाति का उल्लेख है?

बी.एस.टी.सी. परीक्षा, 2008

(a) मीणा
(b) सहरिया
(c) भील
(d) गरासिया

उत्तर:- (a)

व्याख्या:-
- मीणा शब्द का शाब्दिक अर्थ मछली होता है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार इन्हें मत्स्यावतार का रूप माना जाता है। मस्त्य पुराण में मीणा जनजाति का उल्लेख है।

'मोरनी-मोड़ना' किस जनजाति से सम्बन्धित है?

Police Constable Exam-2013

(a) भील
(b) मीणा
(c) गरासिया
(d) सहरिया

उत्तर:- (b)

व्याख्या:-
- 'मोरनी-मोड़ना' मीणा जनजाति से सम्बन्धित है
- राजस्थान की मीणा जनजाति का राष्ट्रीय पक्षी मोर से अधिक लगाव रहा है। इसी कारण मोरड़ी मांडना उनकी परम्परा का अंग बन गया।

भीलों द्वारा, लड़की के विवाह के समय घर की दीवार पर बनाये जाने वाले लोक देवी के चित्र को क्या कहा जाता है?
CET: 07.01.2023 (S-II)

(a) तहनिशा (b) मांडना
(c) फड़ (d) भराड़ी

उत्तर:- (d)

व्याख्या:-
- भीलों द्वारा, लड़की के विवाह के समय घर की दीवार पर बनाये जाने वाले लोक देवी के चित्र को भराड़ी कहा जाता है
- यह भित्ति चित्र एक शुभ अनुष्ठान का हिस्सा होता है, जिसे विवाह के दौरान बनाया जाता है।

भील जनजाति विवाह के अवसर पर, मण्डप की सजावट किस वृक्ष की पत्तियों से करते हैं-
व्याख्याता आयुर्वेद विभाग-13.11.2021

(a) नीम (b) अशोक
(c) आम (d) बबूल

उत्तर:- (c)

व्याख्या:-
- भील जनजाति विवाह के अवसर पर, मण्डप की सजावट आम वृक्ष की पत्तियों से करते हैं, जहाँ इन्हें पवित्रता और शुभता का प्रतीक माना जाता है।

गमेती निम्नलिखित में से किस जनजाति के लोगों का नेता होता है?
कृषि पर्यवेक्षक-03.03.2019

(a) भील (b) मीणा
(c) गुर्जर (d) गरासिया

उत्तर:- (a)

व्याख्या:-
- गमेती/पालवी अनेक वंश से संबंधित भीलों के गाँव का मुखिया।
- राजस्थान की भील जनजाति में ग्राम प्रधान को गमेती कहा जाता है।
- पारंपरिक भील गाँवों का नेतृत्व एक मुखिया (गमेती) करता है।
- गमेती के पास अधिकांश स्थानीय विवादों या मुद्दों पर प्राधिकार और निर्णय लेने की शक्तियाँ होती हैं।

भीलों के गाँव के मुखिया कहलाते हैं-
AAO 29.01.2013
पटवार-24.10.2021 (Shift -II)

(a) पाटिल (b) पटेल
(c) चौकीदार (d) गमेती

उत्तर:- (d)

व्याख्या:-
- उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

'फाइरे-फाइरे' किस जनजाति का रणघोष है?
Police Constable Exam-2013

(a) भील (b) गरासिया
(c) डामोर (d) मीना

उत्तर:- (a)

व्याख्या:-
- फाइरे-फाइरे भील जाति का रणघोष ।
- फाइरे-फाइरे भीलों द्वारा शत्रु से निपटने के लिये किया जाने वाला सामूहिक रणघोष है। यह जातिगत एकता का प्रमुख आधार भी है।

भीलों में 'छेड़ा फाड़ना' क्या है?
ग्राम सेवक-18.12.16
Librarian III Grade 11.09.2022

(a) तलाक (b) पुत्र-जन्म
(c) विवाह (d) त्योहार

उत्तर:- (a)

व्याख्या:-
- छेड़ा फड़ना' भीलों में तलाक है।
- छेड़ा फाड़ना या तलाक जो भील अपनी स्त्री का त्याग कराना चाहता है, वह अपनी जाति के पंच लोगों के सामने नई साड़ी के पल्ले में रुपया बाँधकर उसको चौड़ाई की तरफ से फाड़कर स्त्री को पहना देता है। इससे यह समझा जाता है कि वह स्त्री अपने पति द्वारा परित्यक्त कर दी गई है।
- यह दर्शाता है कि उसके पति का उस पर कोई अधिकार नहीं है और वह अब दोबारा शादी कर सकती है।

डॉ. ग्रियर्सन ने अपनी पुस्तक 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया' में राजस्थानी बोलियों को.... मुख्य समूहों में विभाजित किया है।

EO & RO-14.05.2023 (I)

(a) तीन (b) पाँच
(c) सात (d) नौ

उत्तर:- (b)

व्याख्या:-
- **जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन के अनुसार राजस्थान भाषा का वर्गीकरण –**
- **5 भागों में वर्गीकरण किया।**
- 1. पश्चिमी राजस्थानी
  2. उत्तर-पूर्वी राजस्थानी
  3. मध्य-पूर्वी राजस्थानी
  4. दक्षिणी-पूर्वी राजस्थानी
  5. दक्षिणी राजस्थानी

राजस्थानी भाषा का विकास किस "अपभ्रंश" भाषा से नहीं हुआ है?
निम्नलिखित विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर चुनें:

पशु परिचर - 2024 (2^{nd} Shift) 03.12.2024

(a) मागधी अपभ्रंश
(b) शौरसेनी अपभ्रंश
(c) नागर अपभ्रंश
(d) मारू गुर्जर अपभ्रंश

उत्तर:- (a)

व्याख्या:-
राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति
- राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति **शौरसेनी प्राकृत** के **गुर्जरी अपभ्रंश** से हुई।
- डॉ. जॉर्ज अब्राहम एवं पुरुषोत्तम मेनारिया ने राजस्थान भाषा की उत्पत्ति शौरसेनी प्राकृत के **नागरी अपभ्रंश** से होना बताई है।

'राजस्थानी भाषा दिवस' मनाया जाता है-

कृषि पर्यवेक्षक- 18.09.2021

(a) 21 जनवरी को (b) 30 मार्च को
(c) 21 मार्च को (d) 21 फरवरी को

उत्तर:- (d)

व्याख्या:-
- राजस्थान के संबंध में एक लोकोक्ति प्रचलित है- **'छ: कोस पर पानी बदले, बारह कोस पर बानी'**
- राजस्थान की राजभाषा हिंदी तथा मातृभाषा राजस्थानी है।
- **21 फरवरी को 'राजस्थानी भाषा' दिवस** तथा **14 सितम्बर को 'हिन्दी दिवस'** मनाया जाता है।
- राजस्थानी बोलियों का सर्वप्रथम उल्लेख तथा वैज्ञानिक वर्गीकरण जॉर्ज अब्राह्मम ग्रियर्सन ने 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया' में 1912 ई. में किया।

राजस्थानी भाषा में मुड़िया लिपि को और किस नाम से जाना जाता है?

Asstt. Prof. 07.01.2024

(a) ब्रज (b) देवनागरी
(c) महाजनी (d) मारवाडी

उत्तर:- (c)

व्याख्या:-
- राजस्थानी भाषा में मुड़िया लिपि को **महाजनी लिपि** के नाम से भी जाना जाता है।
- **इसका जनक टोडरमल को कहा जाता है।**

राजस्थानी भाषा का शब्दकोश किसने निर्मित किया?

कम्प्यूटर (संगणक) परीक्षा 03.03.24

(a) कोमल कोठारी (b) कन्हैयालाल सेठिया
(c) सीताराम लालस (d) विजयदान देथा

उत्तर:- (c)

व्याख्या:-
- **सीताराम लालस** ने **'राजस्थानी भाषा का शब्दकोष'** तैयार किया, जो उनकी सबसे महत्त्वपूर्ण कृति मानी जाती है।

◪ **सीताराम लालस का क्षेत्र रहा -**

CET: 07.01.2023 (II)
JEN (Electric) Degree - 18.05.2022

(a) पुरातत्व-इतिहास
(b) राजस्थानी भाषा एवं कोश रचना
(c) पत्रकारिता
(d) समाज सुधार

उत्तर:- (b)

व्याख्या:-

– सीताराम लालस (माड़साब) राजस्थान के प्रसिद्ध भाषाशास्त्री, लेखक और राजस्थानी भाषा के प्रबल समर्थक थे।
– उनका जन्म 29 दिसम्बर, 1908 को एक चारण परिवार में हुआ था।
– वे जोधपुर जिले के नैरवा गाँव के निवासी थे और अपने जीवन को राजस्थानी भाषा, साहित्य और संस्कृति के संरक्षण एवं विकास के लिए समर्पित कर दिया।
– सीताराम लालस ने **'राजस्थानी भाषा का शब्दकोष'** तैयार किया, जो उनकी सबसे महत्त्वपूर्ण कृति मानी जाती है।
– यह शब्दकोष चार खंडों में नौ जिल्दों में प्रकाशित हुआ और इसमें दो लाख से अधिक शब्दों को संकलित किया गया है।
– उन्होंने सन् **1954 में राजस्थानी व्याकरण भी प्रकाशित** की।
– उनके योगदान को सम्मानित करते हुए जोधपुर विश्वविद्यालय ने उन्हें **19 जनवरी, 1976 को डी. लिट की मानद उपाधि** प्रदान की।
– उन्हें सन् **1977 में 'पद्म श्री'** जैसे प्रतिष्ठित नागरिक सम्मान से अलंकृत किया।

साहित्य का काल विभाजन सीताराम लालस द्वारा -

– **आदिकाल -** विक्रम संवत् 800 से 1460 तक
– **मध्यकाल -** विक्रम संवत् 1461 से 1900 तक
– **आधुनिक काल -** विक्रम संवत् 1900 से वर्तमान तक

◪ **डॉ. टेस्सीटोरी के अनुसार राजस्थानी भाषा किस सदी के लगभग अस्तित्व में आ चुकी थी?**

JEN (यांत्रिकी/विद्युत) डिप्लोमा 26.12.2020

(a) 12वीं सदी (b) 11वीं सदी
(c) 13वीं सदी (d) 10वीं सदी

उत्तर:- (a)

व्याख्या:-

– **जार्ज ग्रियर्सन के अनुसार**, राजस्थानी भाषा का उद्गम **'नागर अपभ्रंश'** से हुआ है।
– **मोतीलाल मेनारिया और के. एम. मुन्शी** का मत है कि राजस्थानी भाषा का विकास **'गुर्जरी अपभ्रंश'** से हुआ।
– एल. पी. टेस्सीटोरी ने राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति **शौरसेनी, प्राकृत** से मानी है।
– **महावीर प्रसाद शर्मा** का मत भिन्न है। उनके अनुसार, राजस्थानी भाषा का उद्गम **'शौरसैनी अपभ्रंश'** से हुआ है।
– प्रामाणिक तथ्यों के आधार पर यह माना जाता है कि राजस्थानी **भाषा 12वीं शताब्दी** में अस्तित्व में आ चुकी थी।

डॉ. एल.पी. टेस्सीटोरी के अनुसार राजस्थान भाषा का वर्गीकरण-

i. **पूर्वी राजस्थानी (ढूँढाड़ी) -** खड़ी जयपुरी, अजमेरी, तोरावाटी, काठेडी, राजावाटी, चौरासी, हाड़ौती की बोलियाँ।
ii. **पश्चिमी राजस्थानी (मारवाड़ी) -** खड़ी जोधपुरी, शेखावाटी, थली, बीकानेरी, ढटकी, खैराड़ी, गौड़वाड़ी।

◪ **इतालवी विद्वान टैस्सीटोरी किस क्षेत्र में अपने योगदान के लिए जाने जाते हैं?**

ARO-27.8.2022

(a) नैणसी री ख्यात का अंग्रेजी अनुवाद
(b) आहड़ उत्खनन
(c) राजस्थानी रीति रिवाजों का संकलन
(d) राजस्थानी व्याकरण पर लेख

उत्तर:- (d)

◪ **प्रथम बार पुत्र के जन्म के अवसर पर बालक और उसके परिवार को ननिहाल पक्ष द्वारा वस्त्र व आभूषण दिए जाते हैं। यह रिवाज कहलाता है-**

सांख्यिकी अधिकारी-25.02.2024

(a) जामणा (b) मायरा
(c) पहरावणी (d) जुहारी

उत्तर:- (a)

व्याख्या:-

जामणा-

– पुत्र जन्म पर नाई बालक के पगल्ये (सफेद वस्त्र पर हल्दी से अंकित पद चिह्न) लेकर उसके ननिहाल जाता है। तब उसके नाना या मामा उपहार स्वरूप वस्त्राभूषण, मिठाई लेकर आते हैं, जिसे **'जामणा'** कहा जाता है।

मायरा (भात)-

– लड़की के विवाह के समय ननिहाल पक्ष द्वारा अपनी आर्थिक क्षमता के अनुसार धन देना।
– बहन के बच्चों की शादी होने पर ननिहाल पक्ष की ओर से मायरा भरा जाता है, इसे भात भी कहते हैं।
– यह परंपरा राजस्थान में विशेष रूप से प्रसिद्ध है।

बत्तीसी नूतना (भात नूतना)

– इसमें वर तथा वधू की माता अपने पीहर वालों को निमंत्रण देने व पूर्ण सहयोग की कामना प्राप्त करने जाती है।

पहरावणी-

– राजस्थान की विवाह परंपराओं से जुड़ी एक महत्वपूर्ण सामाजिक रस्म है। इस रस्म में **वधू पक्ष** द्वारा **वर पक्ष** यानी बारात को **यथा शक्ति उपहार और राशि** भेंट की जाती है।
– यह परंपरा **आदर, सत्कार और सौहार्द** का प्रतीक मानी जाती है।
– पहरावणी को कुछ क्षेत्रों में **'जान झंवारी'** के नाम से भी जाना जाता है।

जुहांरी

– राजस्थान की पारंपरिक **विवाह-संस्कृति** से जुड़ी एक विशेष **रस्म** है, जो **दामाद** के सम्मान और सत्कार से संबंधित होती है।
– इस रस्म के अंतर्गत **ससुराल पक्ष** के लोग दामाद को **टीका निकालकर** उसे **नकद रूपए, उपहार आदि भेंट** स्वरूप देते हैं।

◪ **हिन्दुओं की सामाजिक एवं धार्मिक संस्कृति में कितने संस्कार सम्पन्न करवाये जाते है?**

पटवार- 2011

Agriculture Officer: 29.01.2013

(a) 15 (b) 36
(c) 16 (d) 18

उत्तर:- (c)

व्याख्या:-

सोलह संस्कार

– मानव शरीर को स्वस्थ तथा दीर्घायु और मन को शुद्ध और अच्छे संस्कारों वाला बनाने के लिए गर्भाधान से लेकर अंत्येष्टि तक सोलह संस्कार अनिवार्य माने गए हैं।

1. गर्भाधान, 2. पुंसवन, 3. सीमन्तोन्नयन ,
4. जातकर्म 5. नामकरण, 6. निष्क्रमण,
7. अन्नप्राशन, 8. चूड़ाकर्म, 9. कर्णवेध
10. विद्यारम्भ, 11. उपनयन, 12. वेदारम्भ
13. केशान्त/गोदान,
14. समावर्तन/दीक्षान्त संस्कार
15. विवाह संस्कार, 16. अंत्येष्टि

◪ **निम्नांकित में से कौन-सा विकल्प विवाह की रस्मों से संबंधित नहीं है?**

II Grade GK-21.12.2022

(a) कर्णवेध (b) कंकण बंधन
(c) बंदोली (d) सामेला

उत्तर:- (a)

व्याख्या:-

कर्णवेध

– शिशु के तीसरे एवं पाँचवें वर्ष में किया जाने वाला संस्कार, जिसमें **शिशु के कान बींधे** जाते हैं।

– कंकण बंधन, बंदोली, सामेला **विवाह की रस्मों से संबंधित है।**

'जडूला' एक प्रमुख संस्कार है, इसे कहते हैं-
Asst. Agriculture Officer: 29.01.2013

(a) जातकर्म (b) निष्क्रमण
(c) चूड़ाकर्म (d) समावर्त्तन

उत्तर:- (c)

व्याख्या:-

चूड़ाकर्म

– शिशु के पहले या तीसरे वर्ष में सिर के बाल पहली बार मुण्डवाने पर किया जाने वाला संस्कार।

– आम बोलचाल की भाषा में इसे जडूला**, चूड़ाकर्म**, **लटरिया** अथवा मुंडन कहा जाता है।

केशान्त/गोदान

– सामान्यतः 16 वर्ष की आयु में किया जाने वाला संस्कार, जिसमें ब्रह्मचारी की दाढ़ी एवं मूँछ को पहली बार काटा जाता है।

निष्क्रमण

– निष्क्रमण संस्कार बालक के जन्म के 12वें दिन से 4 महीने तक कभी भी बालक को सूर्य अथवा चन्द्र दर्शन करवाने के लिए किया जाता है।

– इस संस्कार के अन्तर्गत बालक को पहली बार घर से बाहर निकाला जाता है**,** यह संस्कार '**सूरज पूजन**' तथा '**कुआँ पूजन**' भी कहलाता है।

जातकर्म

– ये संस्कार शिशु के जन्म के बाद किया जाता है।

– **ये संस्कार पिता नहीं कर सकता।**

समावर्तन/दीक्षान्त संस्कार

– शिक्षा समाप्ति पर किया जाने वाला संस्कार, जिसमें विद्यार्थी अपने आचार्य को गुरु दक्षिणा देकर उसका आशीर्वाद ग्रहण करता था तथा स्नान करके घर लौटता था।

– स्नान के कारण ही ब्रह्मचारी को 'स्नातक' कहा जाता था। **समावर्तन संस्कार** के पश्चात् विवाह होने तक ब्रह्मचारी को **'**स्नातक**'** के नाम से जाना जाता था।

किस समारोह में, किसी देवता या देवी के सामने छोटे बच्चे के बाल पहली बार काटे जाते हैं?
राजस्थान पुलिस कॉन्स्टेबल-14.07.2018 (I)

(a) बढ़ार (b) आख्या
(c) जडूला (d) सामेला

उत्तर:- (c)

व्याख्या:-

– किसी देवता या देवी के सामने छोटे बच्चे के बाल पहली बार काटे जाते हैं, उसे **जडूला** कहा जाता है।

अन्नप्राशन

– जन्म के छठे मास में बालक को पहली बार अन्न का आहार देने की क्रिया।

– इसे देशाटन/अन्नप्राशन संस्कार भी कहा जाता है।

आख्या

– बच्चे के जन्म के आठवें दिन बहनें आख्या करती हैं तथा सांखियाँ (मांगलिक चिह्न) भेंट करती हैं।

पुत्र जन्म के दसवें दिन किस रिवाज को मनाया जाता है?
2nd Grade GK - 2025

(a) दसोटण (b) जामणा
(c) जडूला (d) ढूँढ
(e) अनुत्तरित प्रश्न

उत्तर:- (a)

व्याख्या-

– **दसोटण** -जोधपुर राजघराने में पुत्र जन्म के बाद **10**वें दिन अशौच शुद्धि के अवसर पर किया जाने वाला समारोह।

वह संस्कार, जो बालक को विद्यारम्भ हेतु गुरु के पास ले जाने के समय किया जाता है?
पटवार-2011

(a) चूड़ाकर्म (b) सीमन्तोन्नयन
(c) यज्ञोपवित (d) पाणिग्रहण

उत्तर:- (c)

व्याख्या:-

यज्ञोपवित

– इस संस्कार द्वारा बालक को शिक्षा के लिए गुरु के पास ले जाया जाता था।

राजस्थान की शोध संस्थाएँ एवं संग्रहालय

संगरिया संग्रहालय किस जिले में स्थित है?

जेल प्रहरी परीक्षा-2017

(a) जैसलमेर (b) हनुमानगढ़
(c) बीकानेर (d) गंगानगर

उत्तर:- (b)

व्याख्या:-

सर छोटूराम स्मारक संग्रहालय संगरिया (हनुमानगढ़)

- इसकी स्थापना **स्वामी केशवानन्द द्वारा 1932** ई. को की गई।
- इस संग्रहालय में देश-विदेश की कई महत्त्वपूर्ण दुर्लभ वस्तुओं का संग्रह है।
- स्वामी जी ने शिक्षा यात्रा के दौरान प्राप्त हुई दो प्रस्तर प्रतिमाओं को संगरिया स्कूल में एक कमरे में रखवाया था।
- लोग इन्हें बड़ी उत्सुकता के साथ देखने लगे। लोगों की उत्सुकता के कारण स्वामी जी ने देश के संग्रहालयों के दर्शन किए और संगरिया में संग्रहालय की नींव रखी।

कालीबंगा संग्रहालय कालीबंगा (हनुमानगढ़)

- **कालीबंगा** सभ्यता स्थल के प्राप्त सामग्री को सुरक्षित रखने के लिए, 1985 में इस संग्रहालय की स्थापना की गई है।
- यहाँ उत्खनन से प्राप्त मिट्टी के बर्तन हाथी दाँत, मनके, खिलौने, औजार आदि को प्रदर्शित किया गया है।

पोथीखाना संग्रहालय स्थित है-

E.O. Exam, 2017

JEN (यांत्रिकी/विद्युत)-26.12.2020

कृषि पर्यवेक्षक- 18.9.2021

(a) उदयपुर
(b) जयपुर
(c) जोधपुर
(d) जैसलमेर

उत्तर:- (b)

व्याख्या:-

पोथीखाना संग्रहालय जयपुर

- इसकी स्थापना 1952 में **सवाई मानसिंह द्वितीय** के द्वारा की गई थी।
- इसमें संग्रहालय में **हस्तलिखित पांडुलिपियां और पारंपरिक शैली के मानचित्र** हैं।
- इन पांडुलिपियों में से अधिकांश वेद, पुराण, और भगवत गीता जैसे पुराने धार्मिक ग्रंथों और दर्शन, नाटक, खगोल विज्ञान, ज्योतिष, कविता, चिकित्सा, व्याकरण, गणितीय तालिकाएं और गणनाएं, और इतिहास और जीवनी जैसे विषयों पर हस्तलिखित प्रतियां हैं।
- रचनाएँ मुख्य रूप से **संस्कृत, राजस्थानी, हिंदी, फारसी** और **उर्दू** में हैं।
- इन कार्यों को विभिन्न लोगों द्वारा हाथ से बने कागज, ताड़ के पत्तों और यहां तक कि सांचिपात की छाल पर लिखा जाता है, जिनमें से कई को हस्त-रंजीत चित्रणों के साथ लिखा जाता है।

सिटी पैलेस म्यूजियम उदयपुर

- उदयपुर के राजमहल (पिछोला झील के किनारे) संग्रहालय स्थित है।
- **सिटी पैलेस का निर्माण 1559 ई. में महाराणा उदयसिंह ने** करवाया था।
- महाराणा **भगवंत सिंह ने इस संग्रहालय की स्थापना** की थी।
- म्यूजियम में **गणेश ड्योढ़ी** से प्रवेश किया जाता है।
- अंदर धूणी माता के मंदिर के सामने हल्दीघाटी, चेतक और प्रताप कक्ष है। इनमें हल्दीघाटी युद्ध से संबंधित ऐतिहासिक चित्र हैं।
- राणा प्रताप से सम्बन्धित आयुध भाला, तलवारें, ढालें, कवच, बख्तर आदि प्रदर्शित हैं।
- महाराणा कर्णसिंह द्वारा 1620 ई. में निर्मित चन्द्र महल में एक ही पत्थर से संगमरमर का कुंड बना हुआ है, राजतिलक होने पर इस कुंड में चांदी के 1 लाख सिक्के डाले जाते थे, इस कारण यह **'लक्खु कुण्ड'** के नाम से प्रसिद्ध है।

- महाराणा अमरसिंह द्वितीय द्वारा 1699 ई. में निर्मित 'शिव प्रसन्न अमरविलास महल' जो वर्तमान में **बाड़ी महल** के नाम से जाना जाता है।
- यहीं पर दिल्ली दरबार (12 दिसम्बर, 1903) की महाराणा फतेहसिंह की ऐतिहासिक कुर्सी रखी है।
- दिलखुश महल में 250 वर्ष पुराने चित्र प्रदर्शित हैं। इसी में एक पूरा कक्ष काँच से निर्मित है, इसमें दीवारें, छत व फर्श पर काँच की बारीक कला का अन्यतम नमूना है।
- यहाँ के शस्वागृह में तलवारें, खाण्डे, ढ़ाल, कटारी, तमंचे व बन्दूकों का संग्रह प्रदर्शित है।

अधिकांश सांस्कृतिक गतिविधियाँ जयपुर में सम्पन्न होती है?

P.S.I.-2007
II Grade (Urdu) Exam. 2011
द्वितीय श्रेणी शिक्षक भर्ती 2011

(a) सेन्ट्रल पार्क में (b) जवाहर कला केन्द्र में
(c) नाहरगढ़ किले में (d) सिटी पेलेस में

उत्तर:- (b)

व्याख्या:-

जवाहर कला केंद्र जयपुर

- जवाहर कला केन्द्र की स्थापना वर्ष 1989 में राजस्थान सरकार द्वारा की गई थी।
- **8 अप्रैल, 1993 को तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा** के कर कमलों से इस केन्द्र का उद्घाटन किया गया।
- राजस्थान की लोक एवं शास्त्रीय कलाओं का संरक्षण करना इसकी पहली प्राथमिकता रही है। (स्रोत कला, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग राजस्थान सरकार)
- अस्सी के दशक में जयपुर में स्थापित इस कला केंद्र की सभी नो कलादीर्घाओं में वास्तुविद चार्ल्स कोरिया की मौलिकता और अलंकारिकता झलकती है।
- जवाहर कला केंद्र की इमारत वर्ष 1993 में बनकर तैयार हुई इसका डिजाइन प्रख्यात वास्तुकार चार्ल्स कोरिया ने वर्ष 1986 में बनाया था।

कलाओं के प्रोत्साहन के लिए, 1857 ई. में, 'महाराजा स्कूल ऑफ आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट्स' की स्थापना की थी-

CET: 07.01.2023 (S-II), 08.01.2023 (S-II)
REET (Level-II, S-I)-24.07.2022

(a) सवाई जयसिंह
(b) सवाई रामसिंह-II
(c) जगतसिंह
(d) जसवंतसिंह

उत्तर:- (b)

व्याख्या:-

राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट एड क्राफ्टस, जयपुर

- जयपुर के शासक महाराजा रामसिंह द्वितीय द्वारा 1857 में इस संस्था की स्थापना 'मदरसा-ए-हुन्दरी के नाम से की गई थी। जिसे बाद में महाराजा स्कूल ऑफ आर्ट एंड क्राफ्टस के नाम से जाना जाने लगा।।

सुमेलित कीजिये:

Librarian III Grade 11.09.2022

A. राजस्थान कला विद्यालय	**1. 1963**
B. राजस्थान ललित कला अकादमी	**2.1957**
C. जवाहर कला केन्द्र	**3. 1993**
D. रवीन्द्र मंच	**4. 1888**

(a) A-4, B-2, C-3, D-1
(b) A-4, B-3, C-2, D-1
(c) A-4, B-3, C-1, D-2
(d) A-3, B-4, C-1, D-2

उत्तर:- (a)

व्याख्या:-

जवाहर कला केंद्र जयपुर

- **8 अप्रैल, 1993 को तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा** के कर कमलों से इस केन्द्र का उद्घाटन किया गया।

रवीन्द्र मंच, जयपुर

- रामनिवास बाग के एक हिस्से में संचालित इस रंगमंच की स्थापना 1963 में की गई थी।

विज्ञापन

सफलता की चाबी
राजस्थान परीक्षा हेतु PYQ's सीरीज़

लक्ष्य क्लासेज उदयपुर

लक्ष्य क्लासेज उदयपुर के विषय विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में,

अक्षांश प्रकाशन द्वारा प्रकाशित।

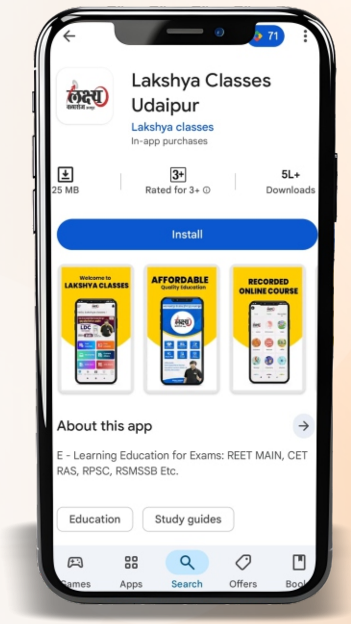

Scan to Download
Lakshya App Now

Google play

MRP : ₹249

CODE : APDO(35)

S.No. AP0030

व्याख्यात्मक हल
लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर
के यूट्यूब चैनल पर उपलब्ध

राजस्थान के सभी बुक स्टोर्स एवं लक्ष्य क्लासेज एप्लीकेशन पर उपलब्ध!

सफलता के पथ पर सबसे तेज उभरता हुआ संस्थान

लक्ष्य क्लासेज ™

M. 9079798005, 6376491126
Plot No 1104, Shiksha Mandir, Sec 4, Circle,
Main Road, Udaipur